श्री विनय आर्य, मंत्री, [illegible], आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MRD-64/2013-16
दयानन्दाब्द–१९२
सृष्टि सं.–१९७२९४९११७
मानव सृष्टि संवत्– १९६०८५३११७

वर्ष-15 / अंक– 01 / चैत्र शु. 10 से चैत्र कृ. 8 सं. २०७३ वि. 16–30 अप्रैल 2016 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.– 12 / मूल्य– 5/–

५१ कुण्डीय महायज्ञ धूमधाम से सम्पन्न

नई दिल्ली। आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 192वें जन्मोत्सव के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में वैदिक विद्या मन्दिर अलवर के विशाल प्रांगण में 51 कुण्डीय महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है। यज्ञ से बैरभाव की प्रवृत्ति नष्ट एवं मित्रभाव की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।

यज्ञ मानव को दानशील बनाता है तथा इससे मनुष्य सर्वहित में अपना हित समझने लगता है। वेद प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि समग्र क्रान्ति के अग्रदूत स्वामी दयानन्द सरस्वती विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, आदित्य ब्रह्मचारी, महान योगी, सन्त हृदय, दया, करूणा, परोपकार, सरलता, सहिष्णुता आदि के धनी युगप्रवर्तक महापुरुष थे। पूरे विश्व को आवश्यकता है ऋषि के संदेश की। आर्यध्वज के नीचे आकर हम ऋषि के संदेश को विश्वभर में फैलाने का शुभ संकल्प लें।

गुजरात के राज्यपाल ओम प्रकाश कोहली के साथ अध्यक्ष वाचोनिधि आचार्य व अन्य आर्य नेता– केसरी

आर्यसमाज गांधीधाम में मना ज्ञानज्योति महोत्सव

गुजरात के राज्यपाल ने की जीवन प्रभात की सराहना

(समाचार पृष्ठ– ५ पर)

नेपाल में २० अक्टूबर से होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

विनय आर्य
काठमाण्डू

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में अगला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में किया जाएगा। यह महासम्मेलन 20 से 22 अक्टूबर, 2016 तक काठमाण्डू में सम्पन्न होगा। ज्ञातव्य है कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली–2012 के अवसर पर घोषित आगामी सम्मेलनों की श्रृंखला में इस वर्ष 2016 का यह अगला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन है। इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी है। शीघ्र ही विकसित कार्यक्रम जारी किया जायेगा। इस महासम्मेलन को लेकर भारत तथा नेपाल में तो विशेष उत्साह है ही साथ ही, विश्वभर में फैले आर्यसमाज के सदस्यगण इसमें भाग लेने के लिए उत्सुक हैं। भारत सहित देश–विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन इस समारोह में सहभागिता करेंगे।

योग शिविर १२ से

अजमेर। परोपकारिणी सभा, केसरगंज द्वारा 12 से 19 जून 2016 तक ऋषि उद्यान में योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर शुल्क एक हजार रुपये है। इस सम्बन्ध में दूरभाष– 0145–2460164 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

वीरांगना शिविर ५ से

जम्मू। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का ग्रीष्मकालीन शिविर जम्मू में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जायेगा। यह जानकारी साध्वी डॉ. उत्तमा यति, मृदुला चौहान, आरती खुराना तथा विमला मलिक ने दी।

नही रहे महात्मा सत्यानन्द मुंजाल

लुधियाना। आर्य जगत के यशस्वी नेता सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं हीरो ग्रुप के स्वामी महात्मा सत्यानन्द मुंजाल का 14 अप्रैल को प्रात: 7:30 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लुधियाना में किया गया। यह जानकारी अजय सहगल 'टंकारा वाले' ने दी। उनके निधन के समाचार से सम्पूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गयी। हार्दिक श्रद्धांजलि

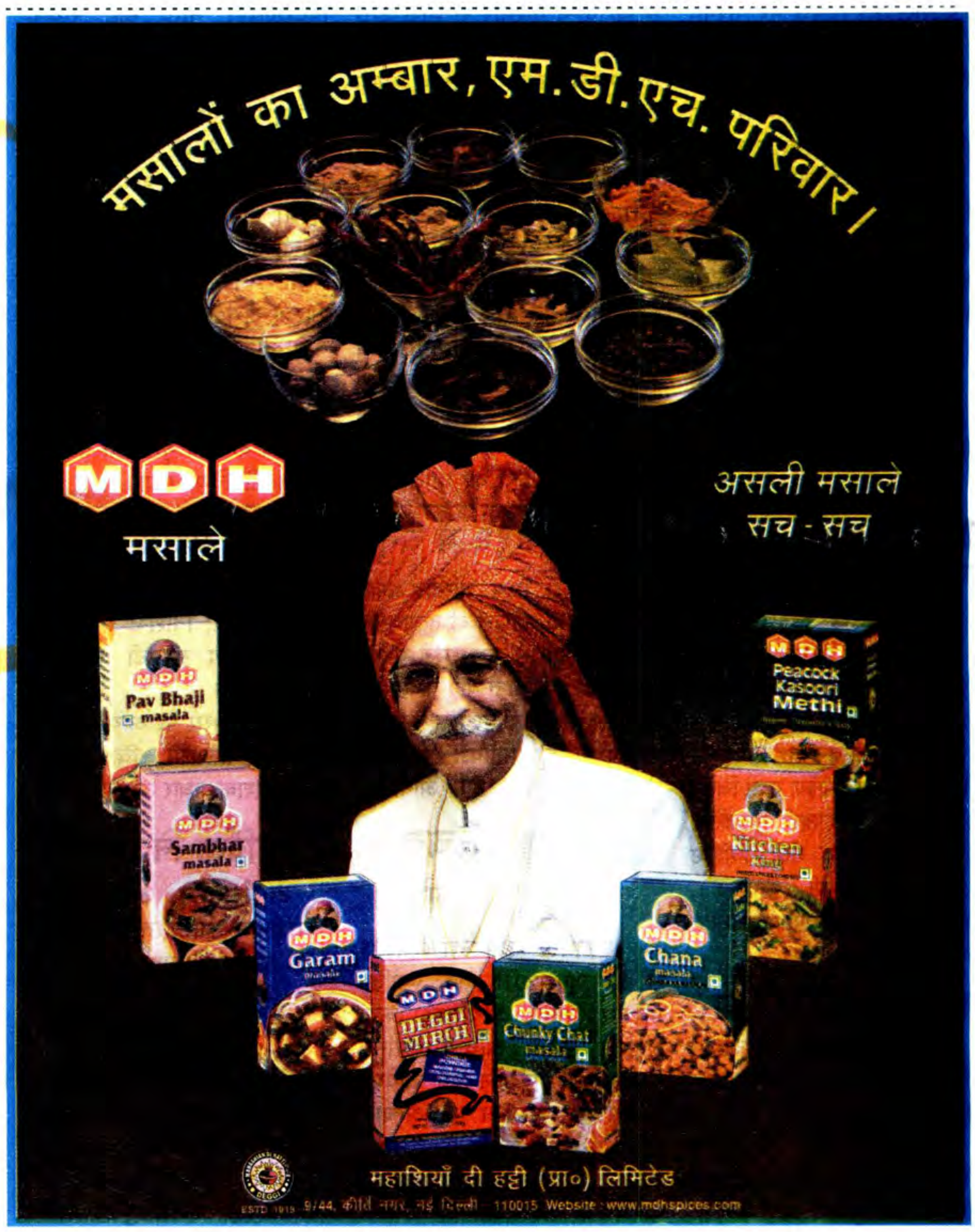

जन्तर-मन्तर, नई दिल्ली पर राष्ट्र-रक्षा यज्ञ का एक दृश्य- केसरी।

आर्य समाज ने किया जन्तर मन्तर पर राष्ट्र रक्षा यज्ञ

शहीद भगतसिंह,राजगुरू, सुखदेव के बलिदान से प्रेरणा लें युवा

देशद्रोहियों व उनके संरक्षकों से कठोरता से निपटे सरकार : अनिल आर्य

नई दिल्ली। 23 मार्च को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्त्वावधान में "जन्तर मन्तर" पर अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 85 वें बलिदान दिवस पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में "राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस" का आयोजन कर स्वतन्त्रता संग्राम के महान शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने पहुंच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रकाशवीर शास्त्री ने "राष्ट्र की रक्षा" के लिये आहुतियां डलवाई। इस अवसर पर नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2073 के अवसर पर राष्ट्र की सुख समृद्धि की प्रार्थना की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त कर उसे देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ा जाये तथा सेना को खुली छूट दी जाये जिससे वह आंतकवादियों व उनके सरंक्षकों को सख्ती से कुचल सके, देश की अखण्डता की कीमत पर कोई गठबन्धन नहीं रखा जा सकता। उन्होंने इस बात पर रोष जताया कि आज भी अनेकों आंतकवादी जेलों में बन्द हैं तथा देश पर बोझ बने हुए हैं उन सब को अविलम्ब फांसी दी जाये। उन्होंने कहा कि आज देश में कहीं पर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते है और कहीं तिरंगा जलाया जाता है ऐसे देशद्रोहियों को सरकार को कठोरता से कुचलना चाहिये। इस अवसर पर आर्य नेता प्रो0 विट्ठलराव, महेंद्र भाई, रविन्द्र मेहता, जगदीश मलिक, नरेन्द्र सुमन, रामकुमार सिंह, गोपाल जैन, हरिचन्द्र आर्य, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), कै. अशोक गुलाटी (नोएडा), अनिल हाण्डा, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, राजेश मेहन्दीरत्ता, महावीर सिंह आर्य, शिवम मिश्रा, मनोज मान, जीवनप्रकाश शास्त्री, अरविन्द मिश्रा, कमल आर्य, वेदप्रकाश आर्य, देवदत्त आर्य, भारतेन्द्र मासूम,डा.विपिन खेड़ा आदि ने भी अपने विचार रखे। प्रधान मन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

वयं राष्ट्रे जाग्रयाम

राष्ट्रवाद की भूमिका जागृत करो

हरिश्चन्द्र आर्य, मौ० काली पगड़ी, अमरोहा

कर्त्तव्य हमारा है पहला, इस देश की रक्षा करनी है।
सब मिलकर इसको नमन करो, यह भारत सबकी जननी है।।

जे0एन0यू0प्रकरण से आहत कोबरा वटालियन के डिप्टी कमान्डर ने फेसबुक पेज पर अपनी पीड़ा और गुस्सा जाहिर किया है। जे0एन0यू0 के भारत विरोधी शोर से भारतीय जवान की शहादत भुलायी जाने पर दिल को छू लेने वाली पोस्ट लिखी है। सी0आर0पी0एफ0 की यह वटालियन हमेशा से नक्सली उग्रवादियों से लोहा लेती रही है। जे0एन0यू0 के पढ़े लिखे इसी बटालियन के अफसर की तिलमिलाहट उन्हीं की जवानी -

आज 03 मार्च 2016 को वस्तर के घने जंगलों में माऊवादियों से भीषण मुठभेड़ में 2 कोबरा कमान्डर शहीद हो गये इस भीषण हमले में 14 अन्य घायल हुए। इसमें बुरी तरह से जख्मी एक कमांडेन्ट एक असिस्टेन्ट कमान्डेन्ट अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसके उलट भारत विरोधी नारे लगाने का एक आरोपी (भारत तेरे टुकड़े होगें) कन्हैया कुमार जमानत पर छूटा है जेल से छूटते ही वह वामपंथियों की रूढ़ि से सराबोर भाषण दे रहा है उसके भाषण से मीडिया मंत्रमुग्ध है। बुद्धिजीवियों ने उसे अपनी श्रेणी का मान लिया है लेकिन इन सब में सैनिकों के लिए कोई जगह नहीं है सैनिक चुपचाप गुमनामी में अपनी जान दे रहे हैं। क्या यही हमारा प्यारा भारत है ?

शायद इतिहास खुद को इसी तरह से दोहराता है।

16 अप्रैल 2010 को जब सी0आर0पी0एफ0 के 73 जवान वस्तर में ही नक्सलवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे तब डी0एस0यू0 (डिमाक्रेटिव स्टूडैन्ट यूनियन) के इन्हीं परजीवियों ने खुश होकर जे0एन0यू0 में जश्न मनाया था। कमोवेश इसी तरह का समारोह हुआ था।

देश में शैक्षिक संस्थान राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र न बने

जम्मू कश्मीर में सात मार्च की रात को सुरक्षा बलों ने हिजबुल मुजाहदीन के कमान्डर दाऊद अहमद शेख को एक मुठभेड़ में मार गिराया। पिछले कुछ दिनों से सुरक्षा बलों को आतंकवादियों के खिलाफ ऐसी कई सफलताएं मिली हैं इसके बाद राष्ट्र रक्षा में सतत् रक्षारत सुरक्षा बल चिन्तित हैं। उनकी चिन्ता का कारण है **आतंकवादियों के जनाजों में लोगों की उमड़ती भीड,** ऐसी भीड़ तो मुख्यमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद के जनाजें में भी नहीं थी। नवम्बर महीने में कुलगाम में सुरक्षा बलों ने लश्कर तईयबा के कमान्डर कासिम को एक मुठभेड़ में मार गिराया था उसके जनाजें में तीस हजार लोग शामिल हुए। उसके मारे जाने के बाद कुलगाम 3 दिन तक बंद रहा । राज्य सरकार को यह आदेश जारी करना पड़ा कि सुरक्षा बलों को आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ वाली जगह से ढ़ाई-तीन किलो मीटर के दायरे में एकत्रित होना निषेद्ध है। आतंकवाद विरोधी कार्यवाहियों में शामिल अधिकारियों का कहना है कि घाटी की तीसरी पीढ़ी बन्दूक की ओर आकर्षित हो रही है। याकूब मेनन, मकबूल वट और अफज़ल जैसे आतंकवादियों के प्रति इतनी सहानुभूति है कि उनकी वरसी ऐसे मनाते हैं जैसे वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हों। वर्तमान परिस्थितियों पर गंभीर चिन्तन कर भारत सरकार से अनुरोध किया जाता है कि राष्ट्रवादी भूमिका विचारों के संरक्षण, देश द्रोही कार्यवाहियों का समूलोच्छेदन सुनिश्चित करें।

संक्षिप्त समाचार

जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, विशाखा एन्क्लेव, पी.यू. ब्लॉक पीतमपुरा, दिल्ली के तत्वाधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव 13 मार्च को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें यज्ञब्रह्मा आचार्य भूपेन्द्र शास्त्री, मुख्यातिथि राजीव मुखी, समाज सेवी, विशिष्ट अतिथि वन्दना कुमारी (विधायक), उपाध्यक्ष दिल्ली विधान सभा तथा मुख्य यज्ञमान सुशील घई रहे।

वार्षिकोत्सव २१ से

सिहोर (महेन्द्रगढ़) हरियाणा। आर्यसमाज का 64वां वार्षिकोत्सव राजकीय उच्च विद्यालय के प्रांगण में 21 तथा 22 मई 2016 को सम्पन्न होगा। यह जानकारी प्रधान लायक राम तथा मंत्री बुधराम आर्य ने दी।

सिंहस्थ २०१६ में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ २१ से

उज्जैन। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के तत्वावधान में सिंहस्थ 2016 कुम्भ मेले में दत्त अखाड़ा क्षेत्र, हनुमन्त बाग के सामने, बढ़ नगर मैन रोड पर पंच कुण्डीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 21 अप्रैल से 22 मई 2016 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर भव्य वैदिक सत्संग, विशिष्ट योग ध्यान सत्र तथा वेद संगोष्ठी आदि भी सम्पन्न होंगी।

इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

ज्योतिष परिचय शिविर २५ से

अजमेर। ऋषि उद्यान में 25 से 28 जून 2016 तक ज्योतिष परिचय शिविर आयोजित किया जायेगा, जिसमें आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा मार्गदर्शन दिया जायेगा। शिविर के सम्बन्ध में आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (दूरभाष- 09414006961) पर सम्पर्क कर सकते हैं।

वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज, अमरोहा

संरक्षक- वीरेन्द्र कुमार आर्य
प्रधान- हेतराम सागर
मंत्री- राजनाथ गोयल
कोषाध्यक्ष- अभय आर्य

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शाहजहांपुर, उ.प्र.

प्रधान- प्रमोद कुमार आर्य
मंत्री- वीरेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- राजेश कुमार आर्य

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (विद्यालय विभाग)

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

कक्षा १ से १०+२

प्रवेश परीक्षा तिथि 02, 16 व 30 अप्रैल 2016

विशेष सूचना : ■ कक्षा प्रथम (1) में प्रवेश के लिए पात्र की आयु 6 वर्ष होनी अनिवार्य है। आयु प्रमाण-पत्र अवश्य साथ लाएं। ■ छात्रों का प्रवेश केवल कक्षा 1 से 9 तक, तथा कक्षा 11 में ही हो सकता है। ■ प्रवेश हेतु गत उत्तीर्ण परीक्षा के अंकपत्र की मूल एवं छायाप्रति, आधारकार्ड या वोटर आई0डी0 की छायाप्रति, छात्र के 10 नवीनतम पासपोर्ट फोटो, 4 फोटो अभिभावक के अवश्य साथ लाएं।

निवेदक : विद्यालय-विभाग, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड (भारत)-249404

फोन : 9412024149, 9927084378, 9456552518, 7556210193, 75208110069

वेबसाइट : WWW.gurukulkangrividyalaya.org

आर्यसमाज के फोल्डर से छात्रों में बढ़ेगा आत्मविश्वास : बिड़ला

अर्जुन देव चड्ढा
कोटा (राजस्थान)

फोल्डर का विमोचर करते सांसद व आर्य समाज के पदाधिकारी- केसरी।

आर्य समाज के इस फोल्डर की प्रेरणा से कोटा में कोचिंग ले रहे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ेगा। सकारात्मक विचारों के साथ कोचिंग छात्र निश्चित रूप से अधिक सफल होकर कोटा से लौटेंगे। उक्त विचार सांसद ओम बिरला द्वारा आर्य समाज द्वारा प्रकाशित फोल्डर- जीवन है अनमोल के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये गये।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कोचिंग छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति के विरूद्ध आर्य समाज द्वारा कोचिंग माहौल को सकारात्मक एवं उर्जावान बनाने का यह प्रयास प्रशंसनीय है। इससे छात्रों को नकारात्मक विचारों पर विजय पाने की प्रेरणा मिलेगा। इस अवसर पर सर्वप्रथम आर्यसमाज जिलासभा के पदाधिकारियों अर्जुनदेव चड्ढा सहित अनेक आर्यों द्वारा सांसद ओम बिरला को केसरिया दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। फोल्डर या परिकल्पना निर्माण पतंजलि योग समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय द्वारा किया गया। प्रकाशन सहयोग योग शिक्षिका पूनम चड्डा का रहा।

कार्यक्रम में जिलासभा प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति देश के विकास में बाधक है। यह फोल्डर छात्रों के साथ उनके अभिभावकों के लिए उपयोगी है। अभिभावक इसे पढ़ें तथा अपने बच्चों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालें तथा उन्हें स्वतंत्रता पूर्वक केरियर का चयन करने दें।

आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का एक दृश्य- केसरी।

जम्मू कश्मीर में सम्पन्न हुआ आर्य परिवार परिचय सम्मेलन

जम्मू। आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक विचारों का प्रायोगिक स्वरूप है। महर्षि दयानन्द ने शास्त्रीय आधार पर कान्तदर्शी वैवाहिक दर्शन प्रतिपादन किया है। उद्र विचार राकेष चौहान प्रधाान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर ने प्रथम बार जम्मू में आयोजित आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन में व्यक्त किये।

सार्वदेषिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा आर्य समाज बक्शी नगर जम्मू में आयोजित 14वें राष्ट्रीय आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन में उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रयासों से आर्य परिवारों को आपस में जोड़ने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्डा के निर्देश पर राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में रामप्रसाद याज्ञिक एवं अरविन्द पाण्डेय कोटा राजस्थान से उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में भारत भूषण आर्य ने कहा कि इस प्रकार के कार्य महिला स्वतंत्रता को बढ़ावा देने वाले हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। इस अवसर पर आचार्य विद्याभानु शास्त्री जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आर्य परिवार में पले बढ़े युवक-युवतियों को आर्य संस्कारों से युक्त जीवन साथी मिलाने का आर्यसमाज का यह प्रयास प्रशंसनीय है। इससे समाज को नई दिशा मिलेगी।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि अब तक 13 सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं। जिसके माध्यम से लगभग 700 लोग वैवाहिक सम्बंध में बंधा चुके हैं।

इस अवसर पर रामप्रसाद याज्ञिक, रविकान्त, योगेश गुप्ता, नरेन्द्र त्रेहन, राजीव सेठी आदि ने व्यवस्था बखूबी संभाल रखी थी।

वेदों में विद्यमान है समस्त ज्ञान-विज्ञान

अर्जुन देव चड्डा
कोटा (राजस्थान)

ऋषि जन्मोत्सव में मंच का भव्य दृश्य - केसरी।

मानव मात्र के लिए जितना भी ज्ञान विज्ञान आवश्यक है सारा वेदों में विद्यमान है। हमें चाहिए कि हम वेदों का अध्ययन करें तथा सभी को इन्हें पढ़ने की प्रेरणा दें व ज्ञान को दूसरों तक पहुंचावें, वेदों के प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाज निरंतर गतिशील है।

उक्त विचार अदालत परिसर स्थित अभिभावक परिषद् सभागार में आयोजित महर्षि दयान्द सरस्वती जन्मोत्सव कार्यक्रम में राजस्थान बार कौसिंल के पूर्व अध्यक्ष व कोटा के वरिष्ठ अधिवक्ता महेश चन्द्र गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जर्मनी से वेदों की पांडुलिपि मंगवाकर उसका हिन्दी भाष्य अनुवाद सरल भाषा में किया जो आज पूरे विश्व के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विकास का आधार बन गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्राणीमात्र के कल्याण के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की। अभिभावक परिषद् कोटा के अध्यक्ष दीनानाथ गालव ने कहा कि मुझे भी आर्यसमाज के कई कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला है तथा मैं आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित हूं और इस पर चिंतन व मनन करता हूं।

जल ही जीवन है,
इसे व्यर्थ न बहाएं

बी.पी., डायाबिटीज, स्टोन, कैन्सर तथा
सभी असाध्य और प्राणघातक रोगों की चिकित्सा

असाध्य और प्राणघातक रोगों ने आपको घेर रखा है क्या?
बहुत चिकित्सा करवाई। कई वर्षों से बहुत कुछ किया......... परिणाम कुछ नहीं निकला........ असाध्य रागों की यातना सहन करनी अब मुश्किल बनी है....... मृत्यु अब बहुत नज़दीक लगती है। हजारों-लाखों रुपया खर्च किया, शरीर की काट-छांट करवा कर अब थक चुके हैं क्या?

- बचना है, तो आइए! असाध्य और प्राणघातक रोगों की चिकित्सा। समस्त देश में सैकड़ों सफल मेडिकल केम्पस में।
- न सुना न सोचा- ऐसी उच्च कक्षा की दवाईयां और सफल चिकित्सा।

24 HRS अयोजक- आर्यसमाज आयुर्वेद हॉस्पिटल्स 24 HRS
नं. 5, कला एस्टेट, मुंबई हाईवे कोर्नर, नारोल सर्कल, अहमदाबाद
ऑल इण्डिया मेडिकल हेल्पलाइन : 09825581004

आउटडोर क्लीनिक : पार्थ टावर नं० 8, विजय हाउस, नवा वाडज सर्कल
(HOSPITAL) 7778050049 (O.D. CLINIC) 07778050059

ए ग्रुप ऑफ आर्यसमाज आयुर्वेद हॉस्पिटल्स इन इंडिया
अंडरटेकिंग, आर्यसमाज आयुर्वेद औषध निर्माण प्रयोगशाला, अहमदाबाद

आर्यसमाज लीगल हेल्प सर्विस "कानूनी सहाय और सहायता केन्द्र"
गुजरात सरकार फोरेस्ट डिपार्टमेन्ट के शुद्ध शहद का विक्रय केन्द्र
गाय का पवित्र शुद्ध घी मिलेगा
स्वामी सत्यपति वैदिक स्टडी सेन्टर : अहमदाबाद (गुजरात)

हरिद्वार के कुम्भ मेले में आर्यसमाज का वेद प्रचार शिविर

हर कीमत पर समाज के विभिन्न वर्गों में भाईचारे को बनाये रखें और इसे टूटने से बचाएं : स्वामी आर्यविश

मनमोहन कुमार आर्य
हरिद्वार।

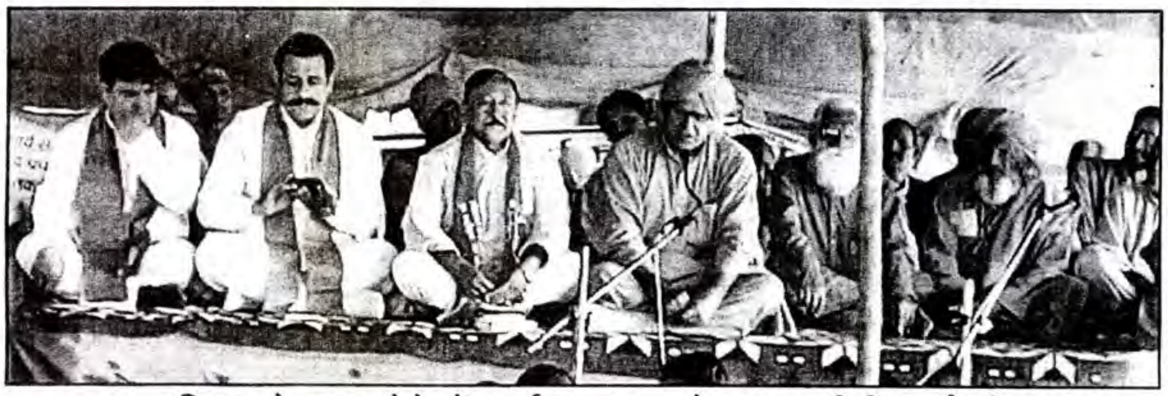

हरिद्वार के कुम्भ मेले में आर्यसमाज का वेद प्रचार शिविर- केसरी।

20 मार्च को हरिद्वार के कुम्भ के मेले में आर्य समाज का वेद प्रचार शिविर और पाखण्ड खण्डिनी पताका का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विधिवत् उद्घाटन किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज हमने हरिद्वार में कुम्भ मेले में वेद प्रचार शिविर का शुभारम्भ किया है। महर्षि दयानन्द द्वारा हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराये जाने की भी चर्चा की। आपने अपने रोहतक भ्रमण की चर्चा की और कहा कि हमें हर कीमत पर समाज के विभिन्न वर्गों में भाईचारे को बनाये रखना है और इसे टूटने से बचाना है। उन्होंने वहां आर्यसमाज की सदभाव रैली भी निकाली और लोगों की राय भी पता की।

उन्होंने आगे कहा कि बच्चों को उनकी योग्यतानुसार कार्य, व्यवसाय व नौकरी मिलनी चाहिये। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्णव्यवस्था का सार भी यही है कि सबको शिक्षा प्राप्ति में एक समान सुविधायें मिले और अध्ययन के पूरा होने पर उनके गुण कर्म व स्वभाव के अनुसार उनको मान–प्रतिष्ठा व व्यवसाय करने का अवसर प्राप्त हो।

स्वामी आर्यवेश जी ने वाल्मीकि रामायण का उल्लेखकर कहा कि जब राजा दशरथ ने अपने चार पुत्रों राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न को गुरुकुल में न भेजकर उनकी शिक्षा की व्यवस्था महर्षि वसिष्ठ जी के अन्तर्गत राजधानी अयोध्या में करने का प्रयास किया तो वहां ऋषि विश्वामित्र जी ने पहुंच कर उनको फटकारा और उनके पुत्रों को शिक्षा हेतु अपने साथ वनों में ले गये। वन में एक स्थान पर रामचन्द्र जी द्वारा हड्डियों के ढेर देखने की चर्चा कर स्वामीजी ने कहा कि महर्षि विश्वामित्र ने उन्हें बताया था कि यह उन धर्मपरायण ऋषियों की अस्थियां थी जिन्हें राक्षस अकारण मृत्यु का ग्रास बनाकर उनकी हत्या कर देते थे। तब विश्वामित्र जी के विद्यार्थी राम ने संकल्प किया था कि मैं कालान्तर में इस धरती को राक्षसों से विहीन कर दूंगा। स्वामी जी ने जर्मन के म्यूनिख के अपने मित्रों की चर्चा की और बताया कि वहां सबके लिए शिक्षा समान है, मत–मजहब आदि भेदभावरहित, अनिवार्य व निःशुल्क है जो महर्षि दयानन्द के विचारों व सिद्धान्तों के अनुरुप है। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के यह विचार व्यावहारिक हैं और भारत में भी लागू किये जा सकते हैं। जर्मन की शिक्षा की यह बात आपने मुख्य रूप से इंगित की कि वहां विद्यार्थियों से फीस या शुल्क नहीं लिया जाता। वहां सब कुछ निःशुल्क है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रधान अनिल आर्य एवं वैदिक साधन आश्रम तपोवन, के मंत्री प्रेमप्रकाश षर्मा जी को उन्होंने वहां युवकों के समय–समय पर वैदिक संस्कार व चरित्र निर्माण शिविर लगाने की अपील की।

आयोजन में मनमोहन कुमार आर्य ने महर्षि दयानन्द के पाखण्ड खण्डन व वेद प्रचार की चर्चा की। श्री हाकिम सिंह, हरिद्वार ने आयोजन में पधारे सभी प्रतिनिधियों को अपने निवास पर जाकर पाखण्ड खण्डन और वेदों के प्रचार करने का आह्वान किया।

इ. प्रेमप्रकाष शर्मा ने कहा कि आज कुम्भ मेले में वेदों के प्रचार के उद्घाटन के अवसर का यह ऐतिहासिक क्षण हैं। हम सब लोग यहां आर्यसमाज के अन्तर्गत वेदों का प्रचार कर पाखण्डों के समूल नाश करने के लिए उपस्थित हुए हैं। बहिन पूनम आर्या का परिचय देते हुए श्री शर्माजी ने बताया गया कि उन्होंने सन् 2005 से बेटी बचाओं आन्दोलन का श्री गणेश किया जो सफल एवं प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ रहा है।

बहिन प्रवेश आर्या जी का पूनम आर्या जी को उनके कार्यों में पूर्ण सहयोग है। यह दोनों बहिनें देश भर में बेटी बचाओं आन्दोलन के अन्तर्गत जन जागरण का प्रभावशाली आयोजन करती आ रही हैं। संचालन डा. वीरेन्द्र पंवार ने किया।

आर्यजनों से सहयोग की अपील

गाँव बहरावद , डा० अतरौली, जिला– अलीगढ़ (उ०प्र०), पिन 202280, ग्रामीण क्षेत्र में स्थित आर्य समाज सेवा संस्थान ट्रस्ट वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में संलग्न है। इसके पास भवन की व्यवस्था नहीं है। बिना साधन सुविधा के यह संस्था निरंतर कार्य कर रही है। इस संस्था से जुड़े आर्य वीर वीरांगना दल के बच्चे प्रतिवर्ष उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखंड के शिविरों में भाग लेते हैं। इसकी अलग ही पहचान बनी हुई है। इनकी शाखा भी लगती है। गाँव में पुस्तकालय सुचारू रूप से चलता है। ढोलक, हारमोनियम एवं ग्रामीण वाद्ययंत्रों के साथ एक भजन मंडली भी है। प्रत्येक वर्ष उत्सव होता है। इस गाँव एवं आसपास के गाँवों के 23 बच्चे विभिन्न गुरुकुलों में दाखिल किए गए हैं। कुछ एम.ए. एम.फिल. कक्षा तक पहुँच चुके हैं। कोई साधन न होने के कारण आर्यसमाज की गतिविधियों के संचालन में बड़ी कठिनाई हो रही थी। इसे देख कर एक सज्जन ने पौने दो सौ गज का एक भूखंड दान में दे दिया। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य आनंद प्रकाश (आर्ष शोध संस्थान आलियाबाद, हैदराबाद) इस संस्था के संरक्षक हैं। अधिकतम निर्माण कार्य उन्हीं के सात्विक दान से संपन्न हुआ है, किन्तु धनाभाव के कारण कार्य पूरा नहीं हो पा रहा है। बहत्तर हजार रुपया कर्ज भी चढ़ा हुआ है। निर्माण कार्य वहीं रुका पड़ा है। चारदीवारी न होने के कारण जानवरों द्वारा वहाँ गंदगी का ढेर लग जाता है। इतनी विषम परिस्थिति में भी यह संस्था नशाखोरी एवं कुरीतियों को दूर करने तथा वैदिक धर्म के प्रचार में लगी हुई है। अभी इस संस्था को काम–चलाऊ भवन निर्माण एवं कर्ज उतारने के लिए तीन लाख रुपए की तत्काल आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुनीत ईश्वरीय कार्य में मदद करने की कृपा करें, जिससे ऋषि कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। दानी महानुभावों का नाम शिलापट्ट पर लिखवा कर यह संस्था गौरव का अनुभव करेगी। इस संस्था के द्वारा पढ़ाए गए बालक–बालिकाएँ प्रतिभाशाली हैं। इन्हें आर्य समाज के कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जा सकता है। संस्था का रजिस्ट्रेशन नं० 32485240585599 है।

भारतीय स्टेट बैंक, अतरौली में खाता संख्या–34057507126 है, जो आर्य समाज सेवा संस्थान ट्रस्ट के नाम से है। आई.एफ.एस.सी. कोड संख्या SBIN0001027 है। कृपया अपना अमूल्य सहयोग उक्त खाते में भेजने एवं निम्नलिखित पते पर सूचित करने का कष्ट करें।

निवेदक–

कमल आर्य, प्रधान आर्य समाज सेवा संस्थान ट्रस्ट

गाँव– बहरावद, डा०– अतरौली, जिला– अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश), पिन–202280

Email address aryasewatrust@gmail-com,

चलभाष– 09968519292, 09756065743, 09560659585

ऋषि बोधोत्सव पर मंच का भव्य दृश्य- केसरी।

उत्साह से मनाया ऋषि-बोध-पर्व

फरीदाबाद। आर्य केंद्रीय सभा की ओर से महर्षि दयानंद बोध उत्सव आर्य कन्या सदन सेक्टर 15 में मनाया गया। इस समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश जी, केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य सहित विभिन्न विद्वानों ने स्वामी दयानंद के जीवन के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला और स्वामी दयानंद को अपनी श्रद्धांजलि दी तथा देश के सभी प्रबुद्ध लोगों से एक जुट होकर देश विरोधी ताकतों से लड़ने का आह्वान किया।

आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान प्रेम कुमार मित्तल ने सभी आर्य जनो से अपील की, कि वे देश से जातिवाद का जहर निकलने का काम अपने हाथ में लेकर देश को बचाने में अपनी भूमिका निभाएं। समारोह में राजेश आर्य, अजय आर्य, डॉ0 गजराज आर्य, सत्य भूषण आर्य आदि भी विचार रखे। आर्य कन्या सदन की वॉर्डन अनामिका ऋषि को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। बालिकाओं ने भी अपने गीत प्रस्तुत किये !

आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा महर्षि की जयन्ती पर ज्ञानज्योति महोत्सव

धर्म का व्यावहारिक रूप है जीवन प्रभात : ओम प्रकाश कोहली, राज्यपाल

वाचोनिधि आचार्य
गांधीधाम (गुजरात)।

'आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 193वीं जयंती पर 'ज्ञानज्योति महोत्सव' डी ए वी पब्लिक स्कूल के प्रांगण में मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे मान्य ओमप्रकाश कोहली जी, महामहिम राज्यपाल, गुजरात ने वेद, भारतीय संस्कृति और महर्षि दयानंद के जीवन पर उदबोधन देते हुए कहा कि आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा संचालित जीवन प्रभात ने निराधार बच्चों को आश्रय दिया है। उन्होंने इसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि जीवनप्रभात धर्म का व्यावहारिक रूप है, क्योंकि संवेदनाएं ही धर्म का सच्चा स्वरूप हैं। महर्षि दयानन्द के विचारों को प्रकट करते हुए महर्षि के वाक्य ' पर–राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो लेकिन स्वराज्य पर–राज्य से अच्छा होता है' पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने बताया कि स्वराज का चिंतन सर्वप्रथम दयानन्द ने दिया था। सामाजिक कुरीतियों, पाखंड, अंधश्रद्धा, दलितोद्धार, बाल विवाह निषेध, विधवा विवाह जैसे क्रान्तिकारी कदम उस समय दयानन्द सरस्वती ने उठाये थे। महर्षि जी ने यह भी बताया था कि वेद और टेकनोलोजि के मूल सिद्धांत वेद में हैं, महर्षि जी ने उस समय वेद के लिए भारतवासियों में अनुराग जगाया, जब यूरोप के लोग वेदों को गडरियों का गीत बताते थे।

जीवन प्रभात परिसर में राज्यपाल ओम प्रकाश कोहली के संबोधन व स्वागत का दृश्य- केसरी।

महामहिम राज्यपाल ने वेद को ज्ञान विज्ञान से भरा ग्रंथ बताते हुए कहा कि वेद के माध्यम से देश समाज और विश्व का कल्याण हो सकता है। उन्होंने आर्यसमाज गांधीधाम एवं उनके प्रकल्प और श्री वाचोनिधि आचार्य की ओर इशारा करते हुए रामायण के प्रसंग को अंकित करते हुए कहा कि जिस राजा का छत्र भरत जैसा मंत्री धारण करता हो वह राजा और उसका राज्य अक्षय होता है।

स्वागत प्रवचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत वेदमंत्रो एवं ईष प्रार्थना से की गयी। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद सीकर, राजस्थान ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि देश में जब अंधकार का युग था, तब लोगों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, सामाजिक कुरितियाँ फैली हुई थीं, तब महर्षि दयानन्द ने समाज को नयी दिशा दी। डॉ0 के डी जेसवाणी ने भी महर्षि जी के गुणगान गाये और वाचोनिधि आचार्य का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि मेरे पिताजी द्वारा स्थापित आर्यसमाज गांधीधाम को वाचोनिधिजी ने कड़ी मेहनत कर नयी ऊँचाई दी और विश्व प्रसिद्ध बनाया। वाचोनिधि आचार्य 30 वर्ष से तन, मन और धन से आर्यसमाज के कार्यो को निष्ठापूर्वक कर रहे हैं। पूर्ण समय आर्यसमाज को दे पाये। इस हेतु से उन्होंने बैंक की नौकरी 10 वर्ष पूर्व छोड़ दी। डॉ0 के डी जेसवाणी का आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

आर्यसमाज के प्रधान वाचोनिधि आचार्य ने गांधीधाम आर्यसमाज की सेवा प्रवृति का विवरण दिया और कहा कि विषम परिस्थितियों में भी आर्यसमाज के उद्देश्यों के अनुसार सामाजिक सेवा कंडला तूफान में राहत बचाव, 26 जनवरी 2001 के भूकम्प के दिन से ही पीड़ितों को भोजन आदि देना राहत बचाव व निराधार बच्चों के लिए जीवन प्रभात की शुरूआत की। आत्मिक सेवा यज्ञादि कर्मकांड 16 संस्कारो को करवाना, शारीरिक सेवा योग कक्षा के माध्यम से शहर के लोगों का स्वास्थ्य अच्छा बनाना आदि कार्य निष्ठापूर्वक किए जा रहे हैं। आभार प्रदर्शन महामंत्री गुरूदत्त शर्मा तथा संचालन उपप्रधान मोहनलाल जांगिड़ द्वारा किया गया। समारोह में पूर्व अध्यक्ष जी.एस. एफ.सी., विनोद चावडा, सांसद कच्छ, श्री रमेश महेश्वरी, विधायक, श्रीमती गीता गणात्रा, अध्यक्षा नगरसेवा सदन, ए जे पटेल, कलेक्टर कच्छ, तथा गणमान्य व्यक्तियों, आर्यसमाज के पदाधिकारियों, ट्रस्टीगण, कार्यकर्ताओं एवं जनता ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमश: 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

ऋषि बोध पर्व के मायने
आओ आत्ममंथन करें ..

शिवरात्रि के दिन मूलशंकर के अन्तर्मन में एक क्रान्ति का उदय हुआ। एक ऐसी क्रान्ति, जिसने सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र, विश्व की तन्द्रा को झकझोर दिया। आज हम बड़ी श्रद्धा से शिवरात्रि के पर्व को इसीलिए बोध पर्व के रूप में मनाते हैं, क्योंकि इसी दिन मूलशंकर के जीवन में असाधारण परिवर्तन हुआ था, और उसी ने उन्हें दयानन्द बना दिया। ऋषिवर दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की, वेदों का यथार्थ भाष्य किया, उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया और वैचारिक क्रान्ति के द्वारा समाज, राष्ट्र तथा सकल विश्व को नई दिशा दी।

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर हमें आत्ममंथन करना चाहिए कि क्यों न हम इस बोध पर्व को जागृति पर्व के रूप में मनाएं। वेदों के महान मर्मज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण मानवता के हित में कुरीतियों, पाखण्डों और अंधविश्वासों से ऊपर उठकर व्यापक सुधार को जो क्रान्तिकारी दिशा दी, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में जिस क्रान्ति का सूत्रपात किया, वेदज्ञान की ज्योति से अविद्या, अंधकार और अन्याय को मिटाने और ईश्वर के सत्य स्वरूप को उजागर करने का जो समग्र प्रयास किया, उस रूप में महर्षि के सन्देशों को कैसे घर-घर तक, अथवा जन-जन तक पहुंचाया जाए, बोध दिवस को किस प्रकार कर्त्तव्य दिवस के रूप में मनाना जाए, यह निश्चय ही हम सब के लिए चिन्तन का विषय होना चाहिए।

ज्ञान के सार्वभौतिक स्रोत अपौरुषेय ग्रन्थ वेद, जिन्हें ऋषिवर ने 'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' कहा है तथा जिसका 'पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनना सब आर्यो का परम धर्म' कहा है, कैसे प्रसारित और प्रचारित हों, इस पर भी व्यापक मंथन एवं रचनात्मक श्रम की आवश्यकता है। हर व्यक्ति स्वीकार करता है कि वेद हमें सद्विचार देते हैं। यह भी मानता है कि वेद हमारे मार्गदर्शक हैं। फिर कैसे ये हमारे पठन-पाठन में आएं और कैसे हम इन्हें आत्मसात् कर सकें? इसकी रचनात्मकता पर भी विचार होना चाहिए। इसमें कोई मतभेद नहीं कि महर्षि दयानन्द की वेदों में अपार श्रद्धा और निष्ठा थी। उन्होंने समाज और राष्ट्र के भटके हुए लोगों को सही दिशा और आनन्द प्राप्त करने के लिए वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया और यह उद्घोषणा की वेदमार्ग से ही वास्तविक उन्नति संभव है, इसलिए हमें इस बात पर गहन विचार करना होगा कि कैसे वेदाध्ययन, वेदानुसरण और वैदिक तत्वों का विश्लेषण आम व्यक्ति तक पहुंचे, जिससे सम्पूर्ण समाज में समग्र वैदिक क्रान्ति का प्रादुर्भाव हो सके।

वास्तव में केवल वैदिक धर्म की जय अथवा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के जयघोष करते रहने से कार्य चलने वाला नहीं, इस दिशा में समग्र प्रयासों की गम्भीर आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। एतदर्थ शिक्षण संस्थाओं, आर्य संस्थाओं, तथा विभिन्न आध्यात्मिक, सामाजिक, व राजनीतिक मंचों पर पहल किये जाने की आवयश्कता है। वेद सार्वभौमिक ग्रन्थ हैं। इनके अनुसरण से मत, मजहब, सम्प्रदाय, गत विवाद भी हल होंगे, आपसी भेदभाव, वैमनस्य व कटुता का भी अन्त होगा, और निश्चय ही होगा एक नए युग का सूत्रपात। आओ! हम ऋषिबोध पर्व को इसी सार्थकता से मनाने का संकल्प लें।

गिरता जलस्तर- एक त्रासदी
कहीं पानी के लिये तो नहीं होगा अगला विश्व युद्ध

डॉ० तुमुल विजय शास्त्री

अगर पानी की समस्या यूं ही बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब पानी के लिए देशों के बीच युद्ध होंगे। विशेषज्ञ यह भी बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। जिसमें उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव तथा हिमखण्डों की बर्फ पिघल रही है। इससे समुद्र तटों के पास के इलाकों के डूबने का खतरा है। आर्थिक विशेषज्ञ यह भी चेतावनी दे रहे हैं कि पानी की कमी मानव की समस्त विशेषकर आर्थिक गतिविधियों को भारी नुकसान पहुंचायेगी। इन हालात में यह समझना बहुत जरूरी है कि पानी की कमी के कारण क्या-क्या खतरे उत्पन्न हो सकते हैं और इनका मुकाबला कैसे किया जा सकता है? विश्व के अधिकांश हिस्सों में पर्यावरण बिगड़ने के कारण अनियमित वर्षा एक साथ पानी ज्यादा बरसने से अक्सर सूखा तथा बाढ़ की स्थिति निर्मित होने और बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगलों की कटाई और पानी के बहाव के क्षेत्रों पर अतिक्रमण के फलस्वरूप पानी की उपलब्धता में लगातार कमी महसूस की जा रही है।

जंगलों की कटाई के कारण वर्षा के दौरान जल तेजी से बहता है और ज़मीन उसे सोख नहीं पाती। तेज बहाव के कारण मिट्टी भी तेजी से बहकर नालों और नदियों में बहकर जा रही है। इसलिए अधिकांश क्षेत्रों में भी जल स्तर तेजी से नीचे गिर रहा है। खेतों से मिट्टी बहने के कारण वनस्पति और अनाज का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। जनसंख्या में लगातार वृद्धि के कारण पानी में प्रदूषण बढ़ रहा है। जिससे तरह-तरह की बीमारियाँ फैल रही हैं और पानी साफ़ करने पर भारी खर्च बढ़ रहा है। साधारण रूप से यह ध्यान भी नहीं रखा जाता कि पानी की उपलब्धता बहुत सीमित है और उसे इसके उपयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। पानी का बहुत अधिक दुरूपयोग होता है और बहुत पानी बेकार ही बहाया जाता है। पानी के सम्बन्ध में आधारभूत तथ्य बहुत ही आश्चर्य में डालने वाले हैं। पृथ्वी के धरातल का 70 प्रतिशत भाग जलमग्न है। दुनिया में कुल पानी का 97.5 प्रतिशत समुद्र का खारा जल है जो मानव के उपयोग के काबिल नहीं है। केवल 2.5 प्रतिशत पानी सीधे उपयोग किया जा सकता है। उपलब्ध 68.9 प्रतिशत हिस्सा हिमखण्डों के रूप में है जो उपयोग के लिए उपलब्ध नहीं रहता और 30.8 प्रतिशत हिस्सा भूजल के रूप में रहता है तथा 2.5 प्रतिशत का केवल 0.3 प्रतिशत हिस्सा, नदियों, झीलों, तालाबों पोखरों में रहता है। जिसका सामान्य रूप से हम उपयोग करते हैं।

इस प्रकार भूजल तथा नदियों, झीलों, तालाबों व पोखरों का थोड़ा सा हिस्सा ही हमें उपलब्ध है जिसका उपयोग हम खेती, पीने के पानी, उद्योगों, जानवरों और बगीचों आदि के लिए कर सकते हैं। इस प्रकार दुनिया भर में उपलब्ध भूजल का लगभग एक प्रतिशत से भी कम पानी हमारे उपयोग के लिए उपलब्ध है और वह मात्रा लगभग स्थायी रहती है। इसी उपलब्ध कम जल को बेकार बहाकर उसको दूषित करके और ज़रूरत से ज्यादा उपयोग करके मनुष्य खुद के लिए संकट उत्पन्न कर रहा है। झीलों, तालाबों, के लिए नदियों में जितना पानी रहता है, उसका लगभग 100 गुना पानी भूजल के रूप में रहता है। क्षेत्र विशेष में भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण भूगर्भीय संतुलन बिगड़ जाता है और किसी भूजल भंडार के क्षतिग्रस्त होने पर फिर से वहाँ भूजल भंडार नहीं बन पाते हैं। दुनिया भर में आदमी जितना पानी बाँधों, तालाबों तथा नदियों से एकत्रित कर पाता है उसका 70 प्रतिशत हिस्सा खेती में सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। भारत में एकत्रित किये गये जल का 90 प्रतिशत तक हिस्सा सिंचाई के काम आता है। शेष हिस्सा पेयजल तथा उद्योगों के काम आता है। उन्नत बीज तथा रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से दुनिया में हरित क्रान्ति आई। इस प्रकार की उन्नत खेती के लिए सिंचाई की अधिक सुविधायें अनिवार्य हैं। इसके कारण खेती का उत्पादन 240 प्रतिशत बढ़ा लेकिन साथ ही खेतों में सिंचाई के लिए पानी का उपयोग 240 प्रतिशत बढ़ गया। आज दुनिया की 20 प्रतिशत खेती सिंचित है। जिसमें 40 प्रतिशत खाद्यान्न पैदा होता है। सिंचाई के लिए बनाये गये बड़े बाँधों से 20 प्रतिशत बिजली मिलती है। बाँधों के विपरीत प्रभाव सिंचाई तथा बिजली के उत्पादन के कारण उनकी अनदेखी की जाती है।

सम्पादक- तुमुल तूफानी,
चन्दौसी (सम्भल) उ०प्र०

जनवाणी

पहले स्वयं तो श्रेष्ठ बनिए

महोदय,

आज हर आर्य समाजी की जुबान से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सारे विश्व को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाएं- का नारा उच्चारित हो रहा है। आश्चर्य तब होता है, जब कुछ अच्छे लोगों के साथ ही ऐसे लोग भी बड़े गर्व से इस नारे को लगाते हैं और लगाने के लिए आग्रह करते हैं, जो महा दुश्चरित्र हैं, जिनकी जुबान पर हर समय झूठ, कर्म में हर समय अनैतिकता, मन में दुर्विचार हैं, जो हर समय राक्षसवृत्ति से भरे हैं। ऐसे लोगों से मैं अनुरोध करना चाहूंगा कि वे पहले स्वयं आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनें, फिर दूसरों को श्रेष्ठ बनाने पर बल दें। वे नहीं जानते कि उन जैसे लोगों को श्रेष्ठ बनाने के उद्देश्य से ही तो यह नारा लगाया जाता है। किंतु वे तो उसी तरह भीड़ में शामिल हो रहे हैं, जिस प्रकार एक चोर को पकड़ने के लिए उसके पीछे भागने वाली भीड़ में स्वयं चोर भी शामिल हो जाता है।

-चन्द्रपाल शर्मा
सुबोधनगर, अमरोहा
फोन : 09634855750

वेद ही आर्य समाज के आधार

महोदय,

आर्य समाज का आधार सनातन ज्ञान वेद है। जो नूतन है न पुरातन है, उसे सनातन कहते हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने किसी नूतन कल्पना को न चलाकर वेद व ऋषि मुनियों के सिद्धान्तों का ही प्रचार-प्रसार किया है। समस्त ज्ञान व विज्ञान के आदि मूल वेग के अनुसार धर्म संस्कार यज्ञ शिक्षा व सत्यार्थ व वर्णव्यवस्था को जन्म के स्थान पर गुण कर्मानुसार सिद्ध करके आर्यसमाज में प्रचलित कराया। बालक-बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक गुरुकुलों को स्थापित कराकर सबको शिक्षा का अधिकार प्रदान कराया। आधुनिक युग में धर्म के वास्तविक स्वरुप व वेद से संयुक्त होने के लिए आर्यसमाज व महर्षि दयानंद से जुड़ना आवश्यक है, क्योंकि आर्यसमाज का आधार वेद है।

-अरुण कुमार मिश्रा
झिलमिल कालोनी, दिल्ली

यज्ञ के रूप में मनाएं होली

महोदय,

परम्परागत होली दहन के स्थान पर यज्ञ आयोजित कर, श्रद्धालुओं से यज्ञ में आहुतियां देनी चाहिए। होलिका माता की जय व प्रह्लाद के जयकारों को बदलकर गायत्री मंत्रों का पाठ करते हुए होलिका की परिक्रमा की जाए। प्राचीन काल में इस दिन राजा-प्रजा मिलकर यज्ञ का आयोजन करके प्रकृति की पूजा करते थे, जिसको होलिका कहा जाता है।

नवीन अन्न, जो पृथ्वी के गर्भ में इस समय विद्यमान होता है, जो कृषक के गृहों में प्रवेश होने वाला होता है, इसके लिए यज्ञ और सुगन्धि की जाती है, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो, महान अन्न की उत्पत्ति करें, तथा असमय वृष्टि न हो। ऋषियों का विचार था कि इस दिन यज्ञ होना चाहिए। यह पूर्णिमा का दिवस है, चन्द्रमा से इसका संबन्ध है। हमें सुरा-सुन्दरी में संलगन नहीं होना चाहिए, उसके स्थान पर ज्ञान और विज्ञान में रत रहना चाहिए, जिससे समाज में वैमनस्य या विरोध समाप्त हो, समरसता का प्रसार हो।

-प्रद्युम्न कुमार आर्य
गढ़वा, छत्तीसगढ़

शहीद दिवस पर यज्ञ के आयोजन का दृश्य- केसरी।

शहीदों को यज्ञ के माध्यम से दी श्रद्धांजलि

जनार्दन प्रसाद पाठक
गोण्डा (उ0प्र0)

आर्य समाज, जिला सभा गोण्डा/बलरामपुर के तत्वाधान में सेनानी महाशय छोटेलाल हाता में गौरवपुरुश शहीद ए आजम सरदार भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को ब्रिटिश हुकूमत ने फांसी के फंदे पर एक साथ आज ही के दिन 23 मार्च 1931 को लटका दिया था। क्योंकि इन राष्ट्रभक्तों से अंग्रेजी हुकूमतों की कुर्सी खिसकने लगी थी। स्वतंत्रता आन्दोलन के जवाबो की आवाज दबाने के लिए इस तरह से ब्रिटिश शासन कार्यतापूर्ण कार्य कर रहे थे। शहीदों को स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदने की प्रेरणा महर्षि दयानंद सरस्वती के क्रान्तिकारी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश से मिली थी और यह प्रमाण है कि देष की अजादी में 85 प्रतिषत आर्यसमाजियो ने अपने प्राणों की आहूति दी थी। ऐसे जाबाज राष्ट्र भक्तों की हर वर्ष आर्य समाज की ओर से यज्ञ के माध्यम से समूचे आर्यजन, अपने, अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते है। यह उद्‌गार जिला प्रधान विनोद कुमार आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहे। उन्होंने होली की पूर्व संध्या पर होली पर्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि यह पर्व समरसता दिखाता है। उसी प्रकार मनुष्य जाति एक विवेक पूर्व प्राणी है। सभी को एक साथ मिलजुल कर रहना चाहिए। रितु में नया अन्न पैदा होता है इससे उत्साह का महौल बनता है। सारी आवश्यकताएं पूर्ण होती है।

आर्य युवक परिषद् का युवा निर्माण अभियान
आगामी शिविर योजना

1. नोएडा–राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर,
दिनांक 11 जून से 19 जून 2016 तक,
स्थानः ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर–44, नोएडा,
सम्पर्क : सौरभ गुप्ताः 09971467978.

2. दिल्ली–आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर,
दिनांक 22 मई से 29 मई 2016,
स्थान : आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली,
सम्पर्क– उर्मिला आर्या : 09711161843.

3. फरीदाबाद–आर्य युवक निर्माण शिविर,
दिनांक 5 जून से 12 जून 2016 तक
श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सैक्टर–88, फरीदाबाद,
सम्पर्क : वेदप्रकाश शास्त्री : 09818045919.

4. जम्मू–कश्मीर–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर,
दिनांक 19 जून से 26 जून 2016, आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू,
सम्पर्क : सुभाष बब्बर : 09419301915.

5. मध्य प्रदेश–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर,
दिंनाक 8 मई से 15 मई 2016,
स्थान : डी.ए.–577, दत अखड़ा, उज्जैन, मध्य प्रदेश,
सम्पर्क : आ. भानुप्रताप वेदालंकार : 09977987777.

6. हरियाणा–आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर,
दिनांक 5 जून से 12 जून 2016
ग्राम–दोहाना खेरा, नरवाना, जिला जीन्द,
सम्पर्क : अश्वनी आर्य : 09255422877.

7. पलवल–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 12 जून से 19 जून 2016 तक, पलवल, हरियाणा,
संयोजक : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती : 09416267482.

धूमधाम से मनाया वार्षिकोत्सव

डा.राजेंद्र प्रसाद आर्य
फूलपुर (आजमगढ़)

वार्षिकोत्सव में प्रवचन करते आचार्य आनन्द पुरुषार्थी-केसरी

अपने बहुत कम साधनों से आर्य समाज के कार्यकर्तागण फूलपुर में विगत आधे दशक से ऋषि की ज्योति जलाने का यत्न कर रहे है। इसी तारतम्य में १,२, ३ अप्रैल २०१६ शुक्र० शनि ० व रविवार में उत्सव का आयोजन किया गया। होशंगाबाद मध्यप्रदेश के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी प्रमुख वक्ता व भजनोपदेशक पंडित श्री दिनेशदत्त जी दिल्ली अपने साथी पंडित नेत्रपाल जी बरेली के साथ आये हुए थे। कुल ६ सत्रों में उपदेशक विद्वानों ने विस्तार से अपना प्रचार कार्यक्रम रखा। आचार्य श्री पुरुषार्थी जी ने जहाँ वेद के अनेक मन्त्रों की व्याख्या करते हुये ईश्वर, कर्म व्यवस्था, मोक्ष ,समाधि योग, विवाह की सप्तपदी, जे एन यू, दिल्ली की अराजक घटना आदि को विषय बनाया तो वहीं पंडित दिनेश दत्त जी ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से गृहस्थ, दयानंद ,ईश्वर,भगवान् रामचंद्र जी व देश विषयक चर्चा की.द्य अंतिम दिन ५१ दम्पति १५ यज्ञ वेदियों पर विराजमान होकर पूर्णाहुति की। यजमानो मे लगभग ७० : श्रद्धालु दम्पति ऐसे थे जो कि आर्यसमाज के सत्संग में ही प्रथम बार आये थे। इससे पूरे ग्राम व क्षेत्र में आर्य समाज का प्रभाव अच्छा पडा। पूर्व माध्यमिक दयानंद बाल मंदिर नाम से एक स्कूल भी संचालित होता है जिसमें ८०० छात्र छात्रायें पढ़ते हैं। इसी भवन में आर्यसमाज का सत्संग प्रत्येक रविवार को होता है तथा वहीं प्रांगण में इस विशाल कार्यक्रम को रखा गया जो प्रतिवर्ष से ज्यादा सफल हुआ। इस अवसर पर प्रध ाान डा.राजेंद्र प्रसाद आर्य व मंत्री विद्यासागर शास्त्री ने आभार जताया।

मुम्बई में हुआ वैदिक मिशन का ज्योतिष सम्मेलन
श्री मोहनकृति आर्ष तिथि पत्रक की सर्वत्र मची धूम

सुमन कुमार वैदिक
मुम्बई।

आचार्य दार्शनेय लोकेश सम्बोधन की मुद्रा में- केसरी।

पूरे भारत के विभिन्न कोनों से आये विद्वानों और विदुषी बहिनों की विशद सभा को वैदिक पंचांग का ठीक ठीक संज्ञान दे पाने में बहुत बड़ी सफलता मिली है। इस संबन्ध में सभी ने आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा किये गये अनवरत श्रम की बहुत बहुत सराहना की। वैदिक मिशन, मुम्बई द्वारा आयोजित ज्योतिष सम्मेलन में यह तथ्य स्पष्ट करने में कि क्यों वर्तमान में प्रचलित सभी पंचांग सिद्धान्तहीन और भ्रामक हैं और यह भी कि क्यों श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक एक मात्र पंचांग है, आचार्य लोकेश के दो वक्तव्य हुए। इस अवसर पर आचार्य जी ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना के 130 वर्ष बाद ही सही किन्तु आज हमने शुद्ध शास्त्रीय, वेद और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वीकृ तियों के अनुसार वैदिक पंचांग बन दिया है। कोइ करे या न करे देश के एक एक आर्य पुरोहित के पास ये पंचांग होना चाहिए और प्रत्येक को नित्य के संकल्पादि में इसका ही उपयोग करना चाहिए। समापन सभा के अपने वक्तव्य में स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक पंचांग देने के लिए आचार्य जी का विशेष ध न्यवाद दिया। इस अवसर पर स्वामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पंचांग को व्यवहार में लेते हुए, इसका संज्ञान लेने के लिए प्रेरित किया। अध्यक्ष डॉ सोमदेव शास्त्री ने सभी का आभार व्यक्त किया।

स्थापना दिवस मनाया

गोण्डा। आर्य समाज कटरा बाजार में आर्य समाज स्थापना दिवस पर दिनांक 7, 8 एवं 9 अप्रैल 2016 को तीन दिवसीय सागवेद परायण यज्ञ का आयोजन पं0 परमानंद प्रेमी (मऊ) ज्ञान चन्द्र शास्त्री रक्सौल, मुख्य आचार्य के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। यह जानकारी मंत्री शिव कुमार सोनी व धनलाल आर्य ने दी।

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के शृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।
डॉ० अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, गोकुल विहार, अमरोहा, फोन : (05922–262033 / 09412139333

कृपया सूचना दें

पाठकों, प्रतिनिधियों व आर्य संस्थाओं के मान्य मंत्रियों/प्रधानों से अनुरोध है कि वे अपने वार्षिक उत्सवों, आर्य पर्वों आदि के समाचार चित्र सहित प्रकाशनार्थ भेजें। - सम्पादक

प्रवेश प्रारम्भ है :

आर्ष पद्धति पर आधारित गुरुकुल में 01 अप्रैल 2016 से आवासीय छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ है। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी- प्राचार्य, मोबा. : 09927854674

आर्ष गुरुकुल विद्यापीठ

देवरी प्रह्लादपुर (सोरों), जनपद-एटा, उ०प्र०

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है।

आचार्य स्वदेश, कुलाधिपति (चलभाष : 9456811519)
आचार्य हरिप्रकाश, प्राचार्य (9457333425, 9837643458)

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा)

प्रवेश प्रारम्भ

संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक तथा मा.शि. परिषद उ.प्र., लखनऊ से मध्यमा (कक्षा 12) तक मान्यता प्राप्त गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हैं। सम्पर्क करें-

दिनेश आचार्य, कार्यालयाध्यक्ष (9411029775)
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, संचालक (9837402192)
आचार्य राजीव, प्राचार्य (9837402192)

गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ (हापुड़) उ०प्र०

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य समाज हजारीबाग द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरुकुल, में प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेशार्थ कन्याओं की अवस्था 9 से 12 वर्ष। कक्षा स्तर चतुर्थ, पाँचवी, छठी। सहयोग- असमर्थ कन्याओं के लिए नि:शुल्क प्रबन्ध एवं समर्थ कन्याओं के लिए केवल 500 रु. मासिक सहयोग राशि। योग्यता परीक्षण के उपरान्त प्रवेश दिया जायेगा।

आचार्य कौटिल्य

आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारीबाग

फोन : 06546-263706, 09430309525, 07277437245

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी

प्रवेश प्रारम्भ

◆ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ◆ विद्याविनोद प्रथम वर्ष (11), उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष (11) ◆ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। ◆ विद्यालंकार/ वेदालंकार प्रथम वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष। ◆ आचार्य प्रथम वर्ष। ◆ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा। ◆ प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा ◆ छात्रावास की उत्तम व्यवस्था।

➔ रु० 150.00 भेजकर नियमावली मंगाएं। कन्या गुरुकल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।

डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

मोबा. : 09458480781, 09627040999, 09258040119

प्रवेश प्रारम्भ हैं

गंगा के पावन तट पर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित गुरुकुल में नए सत्र के प्रवेश ०१ अप्रैल २०१६ से प्रारम्भ हो गये हैं। यहां पर मध्यमा स्तर (इण्टर मीडिएट) की परीक्षाएं, उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित है।

बलदेव नैष्ठिक (प्रबन्धक) मोबा. : 09997437990
प्रेमशंकर मिश्र (प्रधानाचार्य) मो. : 09411481624
आचार्य इन्द्रपाल (मुख्याधिष्ठाता) मो.: 09411929528

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल (मुजफ्फरनगर) उ०प्र०

चतुर्दिश गुंजित हो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का शंखनाद

कृष्ण कुमार

हमें यह कहते हुए तनिक भी संकोच नही हो रहा कि समाज को यदा-कदा चन्दा देकर पदों की दौड़ में लगने वाले लोग न केवल सच्चे दान दाताओं तथा सच्चे आर्यों का मान करते हैं बल्कि वे उन लोगों की दीवानगी को भी कहाँ समझ पाते हैं जो निःस्वार्थ भाव से महर्षि के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए दरवाजे-दरवाजे अलख जमाते फिरते हैं। ऐसे कथित भामाशाह कब समझ सकते हैं उन 'मस्तों' की भावना को जो आर्य जाति की दुर्दशा की कठोर पीड़ा अपने हृदय में लेकर आर्यों को इसलिए आह्वान करते फिरते हैं कि हे आर्यों आप अपने गौरवशाली अतीत से शिक्षा-प्रेरणा लेकर अपने कृत्यों को इसलिए संवारों ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जब इतिहास में आपको तलाशें तो उन्हें निराश न होना पड़े।

हे आर्यो जब आज आर्यावर्त (भारत) में आप आर्यों पर आपकी वैदिक मान्यताओं पर तथा संस्कृति पर चारों तरफ से कुठाराघात हो रहा है, तो बताईये आप कब चेतोगे? व्यक्तिगत स्वार्थों को त्यागकर अपनी संस्कृति अपनी जाति एवं मानवता की रक्षा करने के लिए कब संगठित हो सकोगे? हे आर्यो, आर्यत्व का अर्थ श्रेष्ठत्व है और श्रेष्ठ कभी भी कायर नहीं हो सकता, आवश्यकता पड़ने पर आर्यो को राजगद्दी त्याग कर चौदह वर्षों के वनवास को स्वीकार करके जंगल-जंगल भटक कर उन भयंकर तूफानों का मुँह मोड़ देना पड़ता है जो मानवता के शत्रु के रूप में परमात्मा की बनाई सुन्दर सृष्टि को मटियामेट करने पर उतारू हो जाते हैं। जिन्हें मानवता की रक्षा के लिए महाभारत के युद्ध में अपने संकल्पों को अनदेखा करते हुए भीष्म सरीखे युगपुरूष पर रथ का पहिया लेकर दौड़ना पड़ता है। जिन्हें तमाम शारीरिक भोगों को त्याग कर 'मैं कोन हूँ' की तलाश में स्वामी विरजानन्द का शिष्यत्व ग्रहण करके मानव सेवा का व्रत धारण करके जीवन भर कांटों पर चलते हुए अन्ततोगत्वा विषपान करना होता है, और जिन्हें अपने पुत्र को मृत्यु शैया पर तड़पते हुए छोड़कर चलती ट्रेन से कूदकर इसलिए लहूलुहान होना भी अच्छा लगता है ताकि वे एक पूरे गांव को धर्म परिवर्तन की ज्वाला में भस्म होने से बचा सकें।

हे आर्यो, क्या भामाशाह ने अपना सर्वस्व इसलिए प्रताप के चरणों में न्योछावर कर दिया था कि उनका नाम किसी शिलापट्ट पर लिखा जायेगा? क्या स्वामी श्रद्धानन्द ने इसलिए फिरंगी संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी कि उन्हें अथवा उनकी सन्तान को उनके द्वारा स्थापित गुरूकुल से जीवन पर्यन्त-पीढ़ी दर पीढ़ी आर्थिक लाभ होता रहेगा? क्या महात्मा हंसराज ने इसलिए डी०ए०वी० की नींव रखी थी कि उन्हें ऐश करने के लिए प्रचुर धन की वर्षा होती रहेगी? यदि नहीं तो फिर आज क्यों कदम-कदम पर स्वार्थी हो उठे हैं आर्य जन? आज आर्यो का चिन्तन कहाँ गया? आज आर्यो का मनन कहाँ गया, कहाँ गया उनका त्याग और कहाँ उड़न छू हो गई उनकी मानव सेवा की भावना?

प्रश्न अनेक हैं, उत्तर नदारद हैं। आखिर इन प्रश्नों के उत्तर का शोध कौन करेगा? आप या कोई और? यदि उत्तर की तलाश भी आपने ही करनी है तो क्या मठाधीश बनकर उत्तर तलाश सकोगे? क्या मंचों पर फूल मालाओं तक सीमित होकर महर्षि के सिपाही बन सकोगे? क्या आर्य समाज की सम्पत्तियों के लिए कूटनीतिक पैंतरों द्वारा विश्व को श्रेष्ठ बना सकोगे? बोलो कब तक वेद प्रचार के नाम पर छल करते रहोगे? अथवा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा भार बढ़ाने के लिए आर्य संस्थाओं से जोंक की तरह चिपके रहोगे- बोलो कब तक? हे सच्चे आर्यो, गफलत से जागो, तुम्हारी गफलत न केवल तुम्हारी अपितु तुम्हारी नई पीढ़ियों को भी लील लेगी। स्वार्थ त्याग दो, न केवल अपने ही ऐशो-आराम के साधन जुटाओ बल्कि आर्य समाज की प्रगति के हर चरण पर तन-मन-धन से तुरन्त जुट जाओ, अन्यथा जिस प्रकार आज आर्य संस्कृति पर आक्रमण हो रहे हैं, वह चिन्तनीय है। हम सब जागें तभी गुंजायमान होगा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का शंखनाद।

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी को देश के कोने-कोने में संवाददाताओं एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की। पत्रकारिता व जनसम्पर्क में रुचि रखने वाले तुरन्त सम्पर्क करें। मानदेय योग्यता व कार्यक्षमतानुसार-

डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक, फोन : 09412139333

मुद्रण/प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है। इच्छुक महानुभाव/संस्थाएं प्रकाशन हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं० कालेज के पीछे, अमरोहा

फोन : (05922-262033/ 09758833783/ 08273236003)

: प्रवेश प्रारम्भ :

धनुर्वेद के महान आचार्य द्रोण की कर्मस्थली एवं अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में स्थित पूर्ण आवासीय गुरुकुल में कक्षा 3, 4 व 5 में परीक्षोपरान्त ही प्रवेश होगा। आवेदन पुस्तिका शुल्क रु0 100/- में प्राप्त करें-

सज्जन सिंह- संस्थापक
चलभाष : 09810545951
ई-मेल: yugjagrti.sajjansingh@gmail.com

आचार्य रामकिशोर मेधार्थी
कुलाधिपति/ प्राचार्य
मो. : 08750614501, 08126500672

युग-जागृति वैदिक गुरुकुल
गांव- गैरतपुर बांस, डॉ०- टीकली बादशाहपुर (गुड़गांव) हरियाणा

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो...

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, 09758833783

ऋषिभक्त आर्यो! स्वर्णिम अवसर न खोओ!

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
'वेदभिक्षु'

सृष्टि, वेद एवं मानवों की प्राचीनता को जानने का, हम वेदानुयायियों के पास एक विज्ञान सम्मत उपाय (साधन) है जिसको तिथिपत्रक कहा जाता है। सूर्य-चन्द्र इस (पत्रक) के साक्षी हैं। इस तिथि पत्रक (आधुनिक भाषा में पंचांग) के माध्यम से हम न केवल तिथि नक्षत्र ही जानते हैं, अपितु खगोलस्थ पृथिव्यादि ग्रह, चन्द्रादि उपग्रह, सूर्यादि नक्षत्रों की स्थिति-गति को भी जान लेते हैं। ग्रहोपग्रहनक्षत्रादि के यथार्थ ज्ञान के बिना हमारा न तो कृषि, ऋतुचर्या, स्वास्थ्यादि का कार्य सुचारू रूप से चल सकता है और न हमारे सन्ध्या (योग), देवयज्ञ, संस्कार, पूर्णिमा, अमावस्य, युगादि (संवत्सरादि), श्रावणी उपकर्म, उत्सर्ग, विजयदशमी, दीपमालिका, शिवरात्रि, होली, ऋतु, उत्तरायण, दक्षिणायण, सूर्यचन्द्रग्रहण आदि प्राकृतिक पर्व और श्रीराम नवमी, सीताष्टमी, श्रावणी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, लेखराम तृतीय आदि ऐतिहासिक पर्व ही यथावत सम्पन्न हो सकते हैं। इससे हमको यह बुद्धि में आ जायेगा कि तिथिपत्रक का हमारे जीवन से कितना गहन एवं व्यापक सम्बन्ध है।

एक कटु सत्य का पक्ष भी है। वह है अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास और असत्य का पक्ष। चाहे ऋषि दयानन्द के अनुयायी ही क्यों न हों, किसी न किसी पंचांग से शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, करण, योग व मुहुर्त आदि तो देखते ही हैं। कितने ऐसे ऋषि, दयानन्द भक्त, वेद भक्त, सत्य भक्त हैं जो मुहुर्तों को बहिष्कृत करके ही व्यापार प्रारम्भ करते हों, नूतन-गृह प्रवेश या पुत्र-पुत्रियों का विवाह आदि करते हों? इस बात को यहीं छोड़ते हैं।

यथार्थ तिथि-पत्रक जिनमें सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों की स्थिति, गति, उत्तरायण या तपस (माघ) मासारम्भ, दक्षिणायण या नभस (श्रावण) मासारम्भ आदि ठीक-ठीक दिये हों, ऐसे कितने हैं? स्वर्गीय गुरुवर पण्डित पुरुषोत्तम जी जोशी मुझे ज्योतिष पढ़ाते समय यह कहा करते थे कि 'धार्मिक भोली-भाली जनता को फंसाने के लिये कुछ चतुर पुरुषों के द्वारा घड़ा जाल ही पंचांग है।' आज न्यूनातिन्यून सारे भारतवर्ष में 300 के लगभग पंचांग बनते होंगे। इनमें से विज्ञान के अनुकूल, सृष्टि से सामंजस्य रखने वाले दो-चार पंचांग तो हो सकते हैं, शेष नहीं हैं। ऋषि दयानन्द के अनुयायी पंचांग को अपनाते हैं या नहीं? अपनाते हैं। निश्चित ही अपनाते हैं और अपनाना पड़ता है। जिसको अपनाते हैं, क्या वह पंचांग सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाला भी होता होगा?। क्या उसमें अंधविश्वास नहीं होते होंगे? क्या उसमें सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाले यथार्थ नक्षत्र, तिथि, पर्वों का उल्लेख होता होगा? नहीं, कदापि नहीं। आइए, अब एक ऐसा पंचांग बना है जो कि इन सब दोषों से मुक्त है। सब आवश्यक अंशों से पूर्ण रूप से युक्त ही नहीं सृष्टि से सामंजस्य भी रखता है। यथार्थ मास, तिथि, नक्षत्रादि से सुसज्जित भी है। जिसके अनुसार पर्व, संस्कार, यज्ञादि शुभ कार्य यथावत सम्पन्न होते हैं। इस तिथि पत्रक के निर्माता ज्योतिष पर अधिकार रखने वाले अधिकारी विद्वान हैं। वे स्वयं गणित करके इसे बनाते हैं। अन्धानुकरण करके किसी पंचांग से लेकर नहीं बनाते। आपसे मेरा अभी कोई पांच वर्ष पूर्व परिचय हुआ था। मैंने उनको अधिकारी जानकर तिथि पत्रक बनाने के लिये प्रेरित किया। मैं स्वयं चाहता हूँ कि सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाला व वैदिक परम्परा के अनुकूल तिथि पत्रक बने। संयोग से सत्य के प्रेमी, दार्शनेय लोकेश (सी-276, गामा-1, ग्रेटर नोएडा-201310) नामक ज्योतिर्विद इस कार्य में आगे आये हैं।

यह सत्य है कि ऊपर संकेतित लक्षणों से युक्त शुद्ध तिथि पत्रक बनाने वाला ऋषि दयानन्द का कोई भक्त नहीं दिख रहा है। मैं तो वर्तमान पंचांग के दोषों से बचता हुआ प्रयोजन सिद्ध कर लेता हूँ। मुझे भगवान ने पंचांगों के दलदल से बचने की विद्या दी हुयी है। यह ज्योतिर्विद से भिन्न व्यक्ति के पास हो नहीं सकती। किन्तु अन्य लोग कैसे बचेंगे? यदि इस तिथि पत्रक को अपनाकर लाभ प्राप्त नहीं करेंगे तो हमारा सारा कर्मकाण्ड यथोचित न होगा। इससे कोई नहीं बच सकता। असत्य को छोड़ने के लिये अन्यों को उद्यत रखने के लिये कहने वाले ऋषि दयानन्द के भक्त स्वयं असत्य का अनुसरण कर रहे होंगे। कुल मिलाकर यह आर्ष तिथि पत्रक सभी सत्य प्रेमियों खासकर ऋषि दयानन्द के भक्तों के लिये बड़े ही सौभाग्य की बात है। मैं चाहूंगा कि ऋषि भक्त व शास्त्र एवं सत्य के सभी पक्षधर विद्वान इस तिथि पत्रक को निर्द्वन्द होकर अपनायें। इससे पूर्ण लाभ उठायें। इस अभूतपूर्व प्रयास के प्रणेता विद्वान ज्योतिर्विद, आचार्य दार्शनेय लोकेश का पूर्ण उत्साहवर्द्धन करें। उनको हर सम्भव सहयोग करें तथा प्रेरित करें कि वे इस प्रकार का पंचांग बनाते रहें। हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी पंचांगों को दोषमुक्त मानते हैं तथापि ज्योतिर्विद्या को न जानने के कारण उन्हीं पौराणिक बन्धुओं द्वारा निर्मित पंचांगों का आश्रय लेते हैं। वास्तव में परमुखापेक्षी हैं। पंचांगों में विद्यमान दोषों से युक्त ही होते जा रहे हैं, मुक्त नहीं। हमारे पास मुक्त होने के (ज्यातिर्विद्यादि) साधन ही नहीं हैं।

मैं चाहूंगा कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें, हो सके तो सार्वदेशिक सभा इस पंचांग के विषय में सब समाजों का स्वयं मार्गदर्शन एवं प्रेरणा करे। यह नितान्त वैदिक, अस्तु आवश्यक व सर्वथा श्लाघ्य कार्य है। सभी ऋषि दयानन्द भक्त इस अवसर से लाभ उठायें। प्रयत्न पूर्वक पंचांगों के दलदल से उभरें। परमेश्वर इस सत्य को अपनाने के लिये ऋषिभक्तों की आत्मा में सत्य ज्ञान भर दें। इतिशम्।

-आर्यसमाज, बिहारीपुर,
बरेली, मो० : ०९७५९५२७४८५

रामचन्द्र देहलवी का पुण्य स्मरण

महान शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी का जन्म रामनवमी वाले दिन ही हुआ था और आर्य समाज हापुड़, प्रतिवर्ष सम्मेलन में उनका सम्मान करता था। उनके कुछ संस्मरण इस अवसर पर प्रस्तुत हैं–

एक मौलवी से शास्त्रार्थ हो रहा था। वह मूर्ति का विरोध कर रहा था। देहलवी जी कहने लगे कि बिना मूर्ति तो आपका कोई काम नहीं चलता। इस पर वह उत्तेजित हो गया और इसी बात पर आर-पार की बाजी लग गयी। देहलवी जी मुस्कुराते हुए बोले कि बात पक्की करो। बात पक्की होने पर देहलवी जी बोले कि जेब से रुपया निकालो। उसने रुपया निकाल कर दिया, तो उन्होंने उस सिक्के पर बनी मूर्ति दिखाते हुए कहा कि यह क्या है? आप तो सदैव इसे जेब में रखते हैं। मौलवी शरमा गये। लोगों ने तालियां बजाई और उन्हें विजयी घोषित किया। एक दिन चर्चा में बताया- मौलवी ने पूछा कि ऐसा काम बताओ जिसे करते-करते कभी कोई थके नहीं। मौलवी ने सोचा जो भी काम है, कभी तो थकेगा ही। देहलवी जी पराजित हो जाएंगे। लेकिन आपने कहा कि जब तक व्यक्ति जीवित रहता है, श्वास लेता हुआ कभी नहीं थकता। इस पर मौलवी उनका मुख देखते ही रह गये और शर्म अनुभव की। एक बार देहलवी जी एक मुस्लिम सम्मेलन में गये और मंच पर बोलने के लिए समय मांगा मना करने पर बोले कि एक मिनट ही दे दीजिए। तो अध्यक्ष ने कहा कि एक मिनट तो दे देंगे, लेकिन शर्त है कि कुरान अथवा मुसलमानों के विषय में कुछ नहीं कहोगे। अपने ही विषय में कुछ कह देना। सोचा एक मिनट में क्या बिगड़ जाएगा। श्री देहलवी जी मंच पर आये और कहा कि भाइयों, हम आर्य (हिन्दू) लोगों में एक बहुत बड़ी अच्छाई है। विशेषता यह है कि आपस में भाई-बहन होकर पवित्र संबन्ध रखते, विवाह करके पति-पत्नी नहीं बनते। इतना बोलते ही खलबली मच गयी और सारे सम्मेलन का स्वाद ही बिगड़ गया। इसीलिए काफिर को समय देने के लिए मना किया था। लेकिन अब तो वह दिग्विजयी देहलवी अपनी बात संक्षेप में कहकर गागर में सागर भर चुके थे। ऐसे महामनीषी विद्वान लेखक, उपदेशक का पुण्य स्मरण करते हुए सादर नमन करते हैं।

प्रभो! आर्य समाज में फिर ऐसी शास्त्रार्थ महारथी परम्परा में विद्वान बनने की प्रेरणा प्रदान करें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
गुरुकुल पूठ, गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़)
मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
मोबा० : ६८३७४०२१९२

दयानन्द बाल विद्या मंदिर, आर्यसमाज फेरूपुर (रामखेड़ा) हरिद्वार की ओर से विनम्र निवेदन

आर्य समाज फेरूपुर (रामखेड़ा), हरिद्वार द्वारा संचालित दयानन्द बाल विद्या मंदिर विगत 28 वर्षों से निष्ठापूर्वक शिक्षा प्रदान कर रहा है। इसने जाति, वर्ग, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर श्रेष्ठ मानव निर्माण के निमित्त सहस्रों छात्र-छात्राओं को सुशिक्षित एवं सुसंस्कारित कर समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। यहां से शिक्षित छात्र-छात्राएं विभिन्न उत्कृष्ट पदों, जैसे- पुलिस, रक्षा सेना, इंजीनियर, डॉक्टर, नवरत्न कम्पनियों में सम्मानित पदों को सुशोभित कर अपने परिवार, समाज एवं ग्राम का यश बढ़ा रहे हैं। वर्तमान में शिक्षा के प्रति छात्रों में उदासीनता तथा गिरते नैतिक मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए छात्र-छात्राओं के लिए समय-समय पर योग व बौद्धिक शिविर भी अनेक वैदिक विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के निर्देशन में आयोजित किये जाएंगे। वर्तमान में इसका भवन जीर्ण-शीर्ण (जर्जर) स्थिति में है, जिसके जीर्णोद्धार करने का उत्तरदायित्व आर्य समाज फेरूपुर ने लिया है। विद्यालय में भव्य यज्ञशाला, व्यायामशाला, मुख्यद्वार, सत्संग भवन, वाचनालय, पुस्तकालय, कार्यालय, शौचालय व नल आदि का निर्माण प्रस्तावित है। इनके निर्माण का आनुमानिक व्यय लगभग 10 लाख रुपये है।

आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि महर्षि दयानन्द के पुण्य कृत्य को मूर्तरूप देने के लिए आप अपनी पूर्ण सामर्थ्य एवं शक्ति से सात्विक दानराशि सहयोगार्थ देकर धर्म एवं पुण्य के भागी बनें। आपके द्वारा दिया गया यह सात्विक धन हमारे लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का स्रोत होगा।

: विशेष :

मान्यवर! आप सभी सात्विक दानराशि अपने पूज्य पिताजी, पूज्या माताजी, धर्मपत्नी, भ्राता, व्यक्तिग अथवा अन्य किसी संबन्धी की मधुर स्मृति को चिरस्मरणीय बनाने के लिए भी प्रदान कर सकते हैं। आपके द्वारा प्रदान की गयी दानराशि शिलापट्ट पर उनके ही नाम से अंकित कराई जाएगी, जो हमारे व अन्य दानी महानुभावों के लिए प्रेरणा-स्रोत बनेगी। ''दान धन की श्रेष्ठ गति है।'' दानराशि प्रदान करने का पता- प्रधान/ मंत्री/ कोषाध्यक्ष, आर्य समाज, फेरूपुर (रामखेड़ा) हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

निवेदक- आर्य समाज, फेरूपुर के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

सम्पर्क सूत्र : 09568587290, 09456552518, 08126572222, 09837101611, 09720866058, 09997965852

श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक पर उंगली उठाना उचित नहीं

सुमन कुमार 'वैदिक'

श्री मोहन कृति आर्य तिथि पत्रक पूर्णरूपेण वैज्ञानिक पंचांग है। आज प्रचलित सभी पंचांग हिन्दू धर्म के श्रद्धालुओं को अपने पर्व जिन तिथियों में मनाने को कह रहे हैं, वे तिथियां शास्त्रसम्मत और वैज्ञानिक खगोल गणना के अनुरूप नहीं है। इससे हिन्दू समाज ज्योतिषियों के द्वारा किए गये विश्वासघात का शिकार होकर हर व्रत और त्योहार उसकी वास्तविक तिथि से लगभग 24 दिन बाद मनाने को बाध्य है, जिस कारण वह त्योहार समुचित मास/ ऋतु से अगले मास/ ऋतु में पड़ते हैं। ज्ञातव्य है कि श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक में सौर मासों के वास्तविक संक्रांतियों को आधार मानकर ऋतु अनुसार सही तिथियां और व्रत दिये गये हैं। परन्तु यहां डॉ0 सुद्युम्न जी आचार्य दार्शनेय को सही नहीं मानकर शंकर बालकृष्ण दीक्षित के सुझाव को इस विसंगति को दूर करने का उपाय यथावत् बिना विचार किए स्वीकार कर, भारी भूल करते हैं, जिसके अनुसार प्रचलित एक मास को क्षयमास घोषित कर, तीस दिन पीछे नववर्ष मनाने लगे, अर्थात् चैत्र प्रतिपदा के स्थान पर फाल्गुन प्रतिपदा को ही चैत्र प्रतिपदा मानकर नवसंवत्सर की घोषणा करें। सुद्युम्न जी ने इसके गुणदोष पर विचार नहीं किया तथा कह दिया कि आचार्य दार्शनेय ने भी शायद यही समायोजन किया है। जबकि आचार्य दार्शनेय ने अपने तिथि पत्रक के पृष्ठ 62 पर स्पष्ट किया है कि "मैं आर्यावर्त के समस्त हिन्दुओं को ऐसी खतरनाक दुश्चाल से सावधान रहने की सलाह देता हूँ, क्योंकि इससे वर्तमान विसंगति तो दूर हो जाएगी, किंतु भविष्य में पुनः समायोजन करना होगा। तथा इन सबसे वेद की बात का उल्लंघन होता है, जो कह रहा है कि- अग्नैरन्त:श्लेषो........।" (यजुर्वेद- अध्याय 13, मंत्र 25)।

वेदमंत्र तो बदला नहीं जा सकता, जो स्पष्ट करता है कि वर्ष की छः ऋतुओं में प्रथम ऋतु बसन्त के मधु-माधव दो मास हैं, जिन्हें चान्द्र मासों में चैत्र-बैसाख कहते हैं। हमारा भी यही विचार है कि तात्कालिक लाभ के लिए कोई परिवर्तन (समायोजन) न किया जाए। ऐसा अदूरदर्शी परिवर्तन लाभ कम, हानि अधिक करता है। कुछ काल बाद पुनः विसंगति आने पर परिवर्तन करना होता है। महाराजा विक्रमादित्य के काल में चैत्रादि मासों को ऋतु संबन्ध बनाने के लिए नववर्ष का प्रथम माह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लिया, जिस कारण नव वर्ष में चैत्र माह 15 दिन का रह गया। वर्ष के अन्य मास पूर्णिमा के पश्चात् कृष्ण पक्ष में प्रारम्भ किये जाते हैं, जबकि यह भी अवैदिक है। वेद कहता है कि माह का अन्त अमावस्या से हो। यह कितनी बड़ी विसंगति है। इसका मूल कारण है सौर संक्रांतियों का गलत निर्धारण। जिसमें मकर संक्रान्ति को 22 दिसम्बर के स्थान पर 14/15 जनवरी को मनाना, तथा 13/14 अप्रैल को बैसाखी मनाना। विचारणीय है कि जब ईस्वी कलैण्डर नहीं था, तब हमारे पूर्वज मकर संक्रान्ति, बैसाखी कैसे मनाते थे? चान्द्र मासों को तथाकथित नक्षत्रीय आधार पर नामित कर, गलत सौर मासों पर आश्रित करना। हमारे पंचांगों में तीसरी त्रुटि है, वेद में वर्णित 28 नक्षत्रों के स्थान पर 27 नक्षत्रों को समान विस्तार $13^\circ20'$ का मानना। आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा प्रस्तुत आर्ष तिथि पत्रक में यजुर्वेद के सभी ऋतु संबन्धित मंत्रों को ध्यान में रखकर बसंत आदि ऋतुओं को सिद्धांत ही नहीं, व्यवहार से जोड़कर उपरोक्त सारे दोषों को सदैव के लिए पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है।

आचार्य सुद्युम्न कहते हैं कि दार्शनेय लोकेश ने अपने पंचांग में सभी मासों के नाम बदल दिये हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि वैदिक काल से ही मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस, इष, ऊर्ज, सहस, सहस्य, तपस, तपस्य हमारे यहां महीनों के नाम थे, जिसका विवरण यजुर्वेद में मिलता है। मुगलकाल की दासता के पश्चात् चैत्र, बैसाख इत्यादि चान्द्रमास अधिक प्रचलित हुए होंगे, क्योंकि हिजरी कलैण्डर भी चन्द्रमा के अनुसार था। डॉ. सुद्युम्न संस्कृत के विद्वान हैं, ज्योतिष के नहीं। अन्यथा वह ऐसी बात नहीं कहते, जो वेदविरुद्ध है। हमारे राष्ट्र में सायन अर्थात सौर मास पर आधारित पंचांग, दूसरे निरयन, अर्थात् कल्पित मान के नक्षत्रों से राशियों को स्थिर करके तद्नुसार मास गणना करना प्रचलित है। चान्द्रमास सौरमासों का अनुवर्ती है, उसमें त्रुटि नहीं आती। किंतु त्रुटि आती है मौलिक संक्रान्तियों का उल्लंघन करने पर। सायन पंचांग ऋतु सम्बद्ध तथा वैज्ञानिक व खगोलिकी रूप से सही है।

"भारत सरकार के सांइस और टैक्नोलॉजी मंत्री कपिल सिब्बल ने राज्य सभा में कहा कि "The 'Sayana is scientifically correct and has ramand in the National calender as the best option" श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक/ पंचांग में चान्द्रमासों का संबन्ध ऋतु आधारित सूर्यमासों से स्थापित कर, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग की बहुत सी बातें अपनाकर इसे बनाया है। डॉ. सुद्युम्न जी कहते हैं कि दार्शनेय लोकेश ने नक्षत्र आधारित मासों के प्राचीन नामकरण पर प्रश्नचिह्न लगाया है। महर्षि पाणिनी को ज्योतिष का विद्वान नहीं माना है। यहां विद्वानों को अज्ञानी बताने का अधिकार किसने उन्हें दिया है। जबकि आचार्य दार्शनेय लोकेश के लेख में महर्षि पाणिनी की प्रशंसा ही की गयी है, निन्दा नहीं। उन्हें अज्ञानी नहीं बताया गया है। उन्होंने तो अपने लेख में कहा है कि महर्षि पाणिनी ने शब्द रचना का सिद्धांत स्पष्ट किया है। चैत्र, बैसाख, श्रावण आदि शब्द कैसे बने, यह व्याकरण के विशेषज्ञ ज्योतिष के नहीं, इसमें गलत क्या कहा। चान्द्रमासों का विवरण वेदों में नहीं है। किंतु 28 नक्षत्रों के नाम हैं। नक्षत्र 28 हैं, जबकि चान्द्रमाह बारह हैं। यदि नक्षत्रों के आधार पर चान्द्रमासों के नाम होते, तो वर्ष में बारह नहीं, अट्ठाइस मास होने चाहिए थे। सभी नक्षत्र एक समान विस्तार के न होने से चैत्र पूर्णिमा को चित्रा, वैशाख पूर्णिमा को विशाखा आदि में सदैव चन्द्रमा होगा, सही नहीं है। फलित ज्योतिषी अपने स्वार्थ में 27 नक्षत्र मानकर चले, क्योंकि 27 का 360 में समभाग होता था, $13^\circ20'$ का मान लिया 28 में यह नहीं होता था। भारत सरकार द्वारा गठित कलैण्डर रिफार्म कमेटी न बताया कि सभी नक्षत्र अलग-अलग अंश और कला व बिकला के होते हैं। जैसे चित्रा नक्षत्र 23'33' विकला का सबसे छोटा तथा धनिष्ठा सबसे बड़ा $25^\circ14'07.80''$ का है। राशियों, नक्षत्रों और तिथियों, मासों का कोई आपस में स्थाई संबन्ध नहीं होता। फलित ज्योतिषियों ने भ्रमित करने के लिए ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों के संबन्ध बना रखे हैं। राष्ट्रपति से पुरस्कार प्राप्त वेद के विद्वान जब यह कहते हैं कि जनसामान्य इन्हीं मासों का प्रयोग करता है, हम इन चान्द्रमासों की विशेषताओं को विलोपित नहीं कर सकते, तो बड़ा विचित्र लगता है। महर्षि दयानन्द के काल में अधर्म ने धर्म को दबा लिया था। उस काल में कहावत थी कि 'जितने कंकर, उतने शंकर।' स्वामी दयानन्द यदि अवतार होने का दावा करते, तो भारतवर्ष उनका स्वागत करता। पर महर्षि दयानन्द ने सत्य को मानकर अस्थाई चिकित्सा पर विश्वास नहीं किया। वह कहते थे कि चिकित्सा ऐसी होनी चाहिए, जो रोग का हरण करे, न कि रोगी को मार डालने वाली हो। स्वामी दयानन्द सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक या आत्मिक सुधार का आधार वेद पर रखते हैं। वे वेदविरुद्ध सिद्धांत का समर्थन नहीं करते। राशि और नक्षत्र आधारित मासों का विवरण अवैदिक है। सूर्य, ऋतुओं का निर्माता, धारक और शासक है। चन्द्रमा ऋतुओं को धारण करता है, शासन नहीं। हां चान्द्रमास की अमावस्या, पूर्णिमा आदि तिथियां चक्षु से देखकर बता सकते हैं, जबकि सौरमास को इस प्रकार नहीं जान सकते। किंतु सौर मास प्रधान है। दिन, रात, उत्तरायण, दक्षिणायन, वर्षा, ग्रीष्म, शीत ऋतुओं और वर्ष का निर्माता तो सूर्य ही है। ऋतु अनुसार यदि मास का आकलन नहीं होगा, तो ईद जैसे मुस्लिम पर्वो के समान हमारे पर्व भी कभी गर्मी में, कभी शीत में होने लगेंगे।

विद्वान आचार्य मानते हैं कि मधु-माधव मास वैदिक हैं, परन्तु अब प्रचलित नहीं हैं, जबकि चैत्र इत्यादि जनसामान्य में प्रचलित हैं। उन्हें छोड़कर मधु-माधव के प्रचलन का प्रयास गंगा को विपरीत बहाने के समान है, जिसके सफल होने में संदेह है। आचार्य जी! जब दयानन्द ने वेद की पताका उठायी थी, तो उस समय तो वेदों का स्थान पुराणों ने लिया हुआ था। उस काल में अनार्ष ग्रन्थों का त्याग और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करना क्या गंगा को विपरीत बहाने से कम था? क्या आज दयानन्द के वंशज इतने शक्तिहीन हो गये हैं कि सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं, और संकल्प पाठ में गलत तिथि मास का नाम सही मान रहे हैं। सत्य में समन्वय नहीं होता, सत्य सत्य ही होता है। वस्तुतः पंचाग-सुधार का एक ही समाधान है कि संक्रान्तियों को विषुव और अयनों के संयोग से देखा जाए, तथा उत्तरायाण/ शिशिर ऋतु/ मकर संक्रान्ति/ माघ माह के पश्चात् आने वाले माह के प्रथम शुक्ल पक्ष को माघ शुक्ल पक्ष पहचानें। आंखें खोलकर सत्य की ओर बढ़ें। इसके लिए वैदिक जनों को सभी भ्रामक पंचांगों के उपयोग से बचना चाहिए। धर्म, शास्त्र, खगोल, इतिहास, परम्परा और लोकमानस के सभी पहलुओं पर सम्यक् दृष्टि से विचार करने के बाद निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा सम्पादित श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक धर्म के क्षेत्र में कालगणना की त्रुटि को सुधार कर सही तिथि-व्रत बताने वाला एक क्रान्तिकारी और ऐतिहासिक प्रयास है। यह वास्तव में सुधार है, समायोजन नहीं, जिसमें हजारों-हजारों वर्षों तक कोई परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा।

-आर्ष कन्या गुरुकुल
कोतवाली रोड, नजीबाबाद

वैवाहिक विज्ञापन

वधू चाहिए

◆ मदन आर्य (45 वर्ष) विधुर, लम्बाई 5' 9", शिक्षा- स्नातक, व्यवसाय- कृषि भूमि व आर्य समाज का प्रचार-प्रसार, को आर्य विचारों की वधू चाहिए, जाति-बन्धन नहीं, विधवा भी मान्य। सम्पर्क करें- ग्रा0 व पो0- जड़वार, जि0- सम्भल (उ0प्र0), मो0- 09720256081, 09456888260

◆ किशन कुमार खत्री (41 वर्ष), ऊंचाई- 5'4", गौरवर्ण, गौत्र- बुट्टा, शिक्षा- इण्टर मीडिएट, व्यवसाय- कपड़े की दुकान, हेतु वधू चाहिए। जाति-बन्धन नहीं। सम्पर्क सूत्र- म0 नं0- बी-18, गुरु नानक नगर, सोंख अड्डा, मथुरा (उ0प्र0)। मो0 : 09267260120

वर चाहिए

◆ २५ वर्ष, ५.२" बीटेक (कम्प्यूटर साइंस), एमबीए (इनफोर्मेशन सिस्टम) राजावत क्षत्रिय, झांसी (उत्तर प्रदेश) के आर्य परिवार की सुन्दर, सौम्य, धार्मिक, सरल, मंगली कन्या के लिये सुयोग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं।
संपर्क- मोबा. 9452906568
jaswantthakur2401@gmail-com

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..
तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते...

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आतंकवाद को मारेंगे

शिवअवतार सरस

आतंकवाद से लड़ने को, संघर्ष आज भीषण होगा।
घुसपैठी हमले बहुत सहे, अब आर-पार का रण होगा।।
हे पाकिस्तानी गुर्गो! क्यों यह सोता सिंह जगाते हो?
तुम बार-बार मुंहकी खाकर, आतंकवाद फैलाते हो।।1।।
हम भारतवासी पुनर्जन्म के पग-पग प्रबल पक्षधर हैं।
मर कर भी रहते अमर सदा, हम हर पल अक्षय-अक्षर हैं।।
पहले भी तुझको कई बार, चबवाये चने नाक से हैं।
खुद को समझे हो 'पाक' साफ, अरमान सभी नापाक से हैं।।2।।
यदि बाज न आया करनी से, चटनी तेरी बनवा देंगे।
गीदड़ भभकी दे छोड़, अन्यथा 'नटनी' नाम धरा देंगे।।
यदि चीन और अफगान के बलबूतों पर तू गरज रहा।
तो सीख मान यू0एन0ओ0 की हर देश तुझी को बरज रहा।।3।।
है बहुत सहा हमने तुझको, अब और नहीं सह पायेंगे।
अब भी तू अगर नहीं सुधरा, ईटों से ईट बजाएंगे।।
जैसी करनी वैसी भरनी, छलनी में दुहता दूध अरे।
कीकड़-पाखड़ के पेड़ लगा तू, खोज रहा है फूल खरे।।4।।
अमरीका से पालित-पोषित बलिदान भाव तू क्या जाने?
जगमत है अपने साथ आज, जन-जन देता तुझको ताने।।
आतंकवाद का पुतला तू, हम हर हमला संहारेंगे।
ले 'ओंकार' हुंकार प्रबल, आतंकवाद को मारेंगे।।5।।

-मालती नगर, मुरादाबाद, मोबा. : 09456632671

गया पिछला आया खिलखिला- संवत्सर

मोहनलाल मगो

यह विक्रमी नवसंवत्सर
गले लगाओ सहर्ष
कुछ वह करो समाज को उत्कर्ष
यह है सबका दायित्व, न यह आदेश न परामर्श
कोयल जैसे हों सब सुरीले,
न हो कहीं एक भी काले कौवे जैसा कर्कश।
एहसान रहित करो सेवा, जिससे गरीब लाचार को हो हर्ष
देवता भी लालायित हो कैसे सुखी बना लिया मनुष्य ने नव वर्ष
करो-करो मंगलमय जीवन अपना, परवाह नहीं कितपा है आगे संघर्ष
प्रभु-ईश्वर के, मात-पिता के बन्धु-बांधवों,
शत्रु-मित्रों के करते रहो गलबहियां और चरणस्पर्श
सत-चित-आनन्द का आभास मिलेगा, मन शान्त होगा, खिलखिलाते रहो, मनाते रहो, खुशियों से भरपूर नववर्ष

-पी-६५, पाण्डव नगर, मयूर विहार-१, दिल्ली

चमत्कार होता है

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', नेमदारगंज

परमपिता परमात्मा जब ई ईक्षण करता है- तब संसार होता है।
प्रकृति जब सक्रिय हो जाती है- तब उपकार होता है।।
जीव को मार्गदर्शन मिल जाता है- तब संस्कार होता है,
वैज्ञानिक बन चिन्तन करे- तब आविष्कार होता है।।
परन्तु आम आदमी जब ऋषिकृत 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ लेता है-
तब चमत्कार होता है।
उसका मस्तिष्क घर परिवार और संसार,
सब वेदों के अनुसार होता है।
पोप पाखण्ड छल प्रपंच का प्रतिकार होता है।।

महर्षि दयानन्द और हमारी टंकारा यात्रा

पृथ्वी सिंह आर्य

कार्यक्रम में आप सभी ने खूब लिया आनन्द।
संसार को रास्ता दिखा गये, महर्षि देव दयानन्द।।
महर्षि देव दयानन्द वेदों का प्रचार किया।
इस राष्ट्र की सेवा में, अपना सब कुछ वार दिया।।
पृथ्वीसिंह आचार्य ऋषि का कैसे उपकार चुकाए।
आर्यावर्त की सेवा में, अपना सर्वस्व लुटाए।।

वेदों का प्रचार जिसे था, अपने प्राणों से प्यारा।
दयानन्द को पा करके धन्य हुआ टंकारा।।
धन्य हुआ टंकारा, विश्व में नाम कमाया।
वेदों के प्रचार का, पुनः समय है आया।।
पृथ्वी सिंह आचार्य ऋषि ने सारा विश्व जगाया।
ऋषि की बात नहीं मानी, जाति तूने जहर पिलाया।।

ऋषि का जन्मस्थान देख, हुआ जीवन सफल हमारा।
धन्यवाद है अशोक जी, दिखा दिया टंकारा।।
दिखा दिया टंकारा, आपके हम आभारी।
नहीं हुई कोई असुविधा व्यवस्था की है सारी।।
पृथ्वी सिंह आचार्य कैसे उपकार चुकाएं।
आपके परिश्रमों को हम भूलें नहीं गुनाएं।।

-संयोजक, क्षेत्रीय वेदप्रचार समिति
किरतपुर, बिजनौर

जिन्दगी तो उसी का नाम

कृष्णमोहन गोयल

जिन्दा थे तो किसी ने पास भी बैठाया नहीं,
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।।
पहले कभी किसी ने मेरा हाल भी न पूछा,
अब सभी आंसु बहाए जा रहे हैं।।
एक रूमाल भी भेंट न किया जब हम जिंदा थे,
अब शालें और चादर ऊपर से ओढ़ा रहे हैं।।
सब को पता है कि अब इसके काम के नहीं,
मगर फिर भी बेचारे दुनियादारी निभा रहे हैं।।
कभी किसी ने एक वक्त का खाना नहीं खिलाया,
अब देसी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।।
जिंदगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई,
अब फूलों से सजाकर कंधे पर उठा रहे हैं।।
आज पता चला जिंदगी से कितनी बेहतर है मौत,
हम तो बेवजह ही जिंदगी की चाह किये जा रहे हैं।।

-११३, बाजार कोट, अमरोहा

वेद ऋचाएं गाने आये हैं

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'

हम जग की तस्वीर बदलने आये हैं।
वेद ऋचाएं गाने आये हैं।।
हम जग का अंधकार मिटाने आये हैं।
वेद की ज्योति जगाने आये हैं।।
हम जग को स्वर्ग बनाने आये हैं।
दयानन्द संदेश देने आये हैं।।
हम जग से द्वेश-कलह मिटाने आये हैं।
वैदिक धर्म को सम्पन्न बनाने आये हैं।।
हम जग की तस्वीर बदलने आये हैं।
वेद ऋचाएं गाने आये हैं।।

-ग्राम रिहावली, फतेहाबाद (आगरा)
मोबा. : 9457879120

चन्द्र बोस प्यारा

विशनलाल वर्मा

सभी को पता है, गगन पथ गया है
कोई तो बताओ, वह किधर को गया है
गगन की दिशाओं
गगन की हवाओं
सूर्य चन्द्र तारों
तुम्हीं तो बताओ
'चन्द्र बोस प्यारा' किधर को गया है
सभी को पता है, गगन पथ गया है
शत्रु को जिसने ऐसे पुकारा
भागे फिरंगी है भारत हमारा
'आजाद हिन्द' का रोशन सितारा
जग में अद्वितीय नेता हमारा
दुनिया वालों बताओ किधर को गया है
सभी को पता है गगन पथ गया है
मैं भारत को आजाद
करके रहूंगा
मुझे खून दो
मैं आजादी दूंगा
ये उद्घोष उसका, किधर को गया है
सभी को पता है, गगन पथ गया है
ओ देश के कर्णधारो
सत्त के भूखे लोगों
मदमस्त हो, मत सोओ
अब तो नींद से जागो
सत्ता के स्वामी बोलो, वह कहां खो गया है
सभी को पता है, गगन पथ गया है।

-ग्राम- जमना खास, जिला- अमरोहा

नव संवत्सर पर विशेष

नमन तुम्हें हे आर्य समाज

विमलेश बंसल 'आर्या'

नमन तुम्हें हे नव संवत्सर,
नमन तुम्हें हे आर्य समाज।
नमन तुम्हें हे भारत माता,
नमन तुम्हें हे प्रिय ऋषिराज।।
नव संवत् की चौत्र पंचमी,
आर्य समाज बनाया था।
गहन नींद से जगाकर घषि ने,
सत्य का बोध कराया था।।
पीकर विष पत्थर खा खाकर,
पुनः किया हमको आगा।। नमन तुम्हें हे
थे हम आर्य यहीं के वासी,
आर्य संस्कृति थी अपनी।
विश्व गुरु था देश हमारा,
वैदिक संस्कृति जग जननी।
आओ हम संकल्प सभी लें,
सफल करें ऋषि की आवाज।। नमन तुम्हें हे
घर घर जाकर यज्ञ रचाकर,
हर घर को महाकाना है।
निज संस्कृति से अपने बच्चों,
को संस्कार दिलाना है।
आर्यावर्त बनेगा फिर से,
विमल वेद सिर धारें ताज।। नमन तुम्हें हे..
बुझ न पाये ज्योति हमारी,
चिंतन हमको करना है।
आलस छोड़ें कमर कसें ,
माँ वंदन हमको करना है।
तन- मन -धन सब कर दें अर्पण,
अमरपुत्र बनकर के आज।।
नमन तुम्हें हे..

329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65
चल दूरभाष-8130586002
email : vimleshbansalarya69@gmail.com

इन्द्रदेव जी गुलाटी

संचालक–
वीर सावरकर पुस्तकालय
एवं वाचनालय
बुलन्दशहर (उ0प्र0)

हार्दिक धन्यवाद

श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी जी वैदिक संस्कृति, शिक्षा एवं समाज सेवा के प्रति समर्पित एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका आर्यावर्त केसरी में आर्थिक एवं वैचारिक दोनों ही प्रकार की पावन आहुतियां निरन्तर प्राप्त होती रहती हैं। आपने अभी दिनांक-30.03.2016 को आर्यसमाज स्थापना दिवस-08 अप्रैल 2016 के पावन उपलक्ष्य में 'आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, गुलावठी (बुलन्दशहर)' की आजीवन सदस्यता निमित्त रुपये 1100/- की धनराशि अपनी ओर से प्रेषित की है। यही नहीं आप समय-समय पर कितनी ही संस्थाओं के नाम से आर्यावर्त केसरी तथा अन्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए वार्षिक तथा आजीवन सदस्यता राशि भेजते रहते हैं। इसके लिए हम हृदय से आभारी हैं तथा उनके श्रीसम्पदा व सुयशमय जीवन व दीर्घायुष्य की मंगल कामना करते हैं। – सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ)

नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं -सम्पादक

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 08273236003, 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, अमित कुमार, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

सत्यार्थ प्रकाश
के प्रकाशन निमित्त प्राप्त सहयोग राशियां

श्रीमती सुषमा गोगलानी एवं श्री अशोक गोगलानी, गाजियाबाद
रु. २१००/-

आर्यसमाज बीएचइएल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
रु. २१००/-

श्री हरवीर सिंह जी आर्य
मन्त्री आर्यसमाज, कविनगर गाजियाबाद
रु. २१००/-

श्री कुंवरपाल सिंह आर्य
ग्वालियर (म.प्र.)
रु. १०००/-

श्री चन्द्रशेखर त्यागी
इन्द्रापुरम, गाजियाबाद
रु. ११००/-

आर्यसमाज छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)
६०००/-

ऋषि के कालजयी ग्रन्थ
सत्यार्थ प्रकाश
के प्रकाशन निमित्त
प्रतिवर्ष ११०००/-
सहयोग का संकल्प

श्री सन्तोष आर्य जी
पुरोहित- आर्यसमाज, जालना (महाराष्ट्र)

सुभाष चन्द्र आर्य (प्रधान) | सतीश प्रकाश शास्त्री (मन्त्री) | प्रेम हरि आर्य (कोषाध्यक्ष)

११००/- आर्य समाज- रुद्रावली (फैजाबाद)

श्री मिठाई लाल सिंह जी
पूर्व प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निमित्त रुपये- ११०००/- के सहयोग का संकल्प

श्री विनय प्रकाश आर्य (अमरोहा) २०००/-

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी की प्रिन्टिंग यूनिट

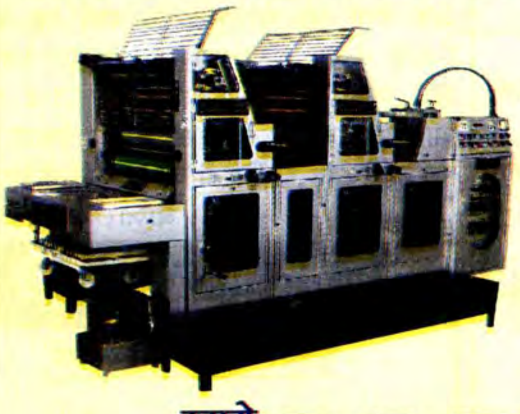

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रुपये **225** में **1000** कलर्ड विजिटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार, पत्र व पत्रिका, स्टीकर्स, बिल बुक, स्कूल कॉलेज के कलर्ड प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के मुद्रण व प्रकाशन के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, e-mail : aryawartkesari@gmail.com